चन्दामामा
अगस्त १९९५
Rs 5

न्यूट्रीन
फलदार दावत!
nutrine
Fruit·Roll
मुफ़्त!
लूटो ढेर सारा मज़ा न्यूट्रिन फ्रूटरोल के साथ और
भेजो इन के चार रैपर 'रैपर फन्, नं. 10, लीथ
कैजल रोड, शांथोम, मद्रास - 600 028' पते पर,
पाने के लिए एक मुफ़्त टाइम टेबल!
इस पेशकश के बिना भी न्यूट्रिन स्वीट्स उपलब्ध है।
nutrine
HARMONY - T81/95 - Hin

चन्दामामा

अगस्त १९९६

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

लो आ गये खेल खिलौने. आंतरराष्ट्रीय स्तर के बिल्कुल सुरक्षित. एक से बढ़कर एक खिलौने. जो नाचे-गाये, धूम मचाये, चिखते चिल्लाते, चढ़ते गिरते.
मम टॉएज की ओर से दिलकश उपहार,जिसमें समाया आपका प्यार.

रैप डान्सर
कल के कलाकारों का
जोशीला साथी

पावर-सॉसर टॉप
अंतरिक्ष युग से आया लट्टू
बच्चे उस पे हो गये लट्टू

बर्थ डे केक पियानो
जियो हजारों साल की धुन बोले
बच्चों का तन-मन डोले

पियानो पैन्सिल बॉक्स
संगीत के तार
छेड़े उभरते कलाकार

रैप कैसेट
सुनकर जिसकी धुन पांव थिरके ऐसे
माइकल जैक्सन जैसे

HEAD OFFICE: M.M.Toys Industries Ltd., 5, Chandra Bagh Avenue, Mylapore, Madras-4. Ph: 835151, Fax: 843010.

8018.96

चन्दामामा
चांदोबा
चन्दामामा

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

कक्षाओं में क्रीडाएँ

क्रीडाओं के संबंध में जब सोचने लगते हैं, तब तक्षण ही मैदानों की ही बात याद आती है। किन्तु आजकल तरह-तरह की क्रीडाएँ अंत:शालाओं में खेली जाती हैं। भीतरी भाग के सीमित क्षेत्र में ये खेल खेले जाते है। लेकिन इन क्रीडाओं का प्रवेश कक्षाओं में भी हो चुका है। इस शीर्षक से पाठकों में यह जिज्ञासा जगी होगी कि कक्षाओं में क्रीडाएँ कैसे ? हमारा अभिप्राय उन क्रीडाओं से है, जो पाठशालाओं में पाठ्यक्रम का एक अंश बन गयी हैं।

साधारणतया भाषा, गणित, इतिहास, विज्ञान आदि विषयों के लिए समय निर्धारित किया जाता है। इस अवधि में ये विषय सिखाये जाते हैं। कुछ पाठशालाओं में संगीत, नृत्य, तथा पुस्तकालयों में पुस्तक-पठन के लिए भी समय निर्धारित होता है। साथ ही विद्यार्थी मैदान में भेजे जाते हैं, जहाँ वे अपनी इच्छा केअनुसार खेल खेलते हैं। वे मैदान में जाकर खेलों में निमग्न हो जाते हैं। क्योंकि वहाँ खेलते-खेलते अपने पाठ्य-पुस्तकों तथा पाठ्य-क्रम को भुला देते हैं। अब पाठशालाओं में क्रीडाएँ भी पाठ्य-क्रम का अंग बनने जा रही हैं। वे अध्ययन का एक विषय होने जा रही हैं।

अभी हाल ही में कटक में एक केंद्रीय-मंत्री ने घोषणा की थी कि सरकार द्वारा आयोजित कमेटी ने सिफ़ारिश की है कि अगले शैक्षिक वर्ष से पाठ्यक्रम में क्रीडाएँ भी एक विषय हो। सरकार द्वारा चलाये जानेवाले केंद्रीय विद्यालयों तथा नवोदय पाठशालाओं में इसे प्रायोगिक रूप से प्रवेश किया जायेगा। अगर चाहें तो शेष पाठशालाएँ भी इसे पाठ्यक्रम का विषय बना सकती हैं। अभी इस संबंध में पूरे विवरण प्राप्त नहीं है, किन्तु अनुमान लगाया जा सकता है कि क्रीडा के किस अंश को कक्षाओं में पढ़ाया या सिखाया जायेगा। उदाहरण के लिए फुटबाल को ही लीजिये। विद्यार्थियों को बताया जायेगा कि टोली का निर्माण कैसे हो, हर खिलाड़ी की जगह कहाँ और कैसी हो, उसे क्या करना चाहिये, खेल के क्या-क्या नियम हैं, आदि। ये खेल किसी एक विद्यार्थी से खेले नहीं जायेंगे, बल्कि विद्यार्थियों का एक समूह खेलेगा। इससे, उनमें मित्रता तथा सामूहिक रूप से कार्य करने की प्रेरणा जगेगी। भाई-चारे की भावना बढ़ेगी। जीवन में इस प्रेरणा और भावना का बड़ा ही महत्व है। कक्षाओं में क्रीडा-विषय का प्रवेश अवश्य ही विद्यार्थी को बचपन से ही शारीरिक और मानसिक रूप से दृढ़ से दृढ़ व अनुशासित बनायेगा।

वर्ष : ४८ — अगस्त १९९५ — अंक : १२
एक प्रति : रु. ५/- — वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

यही है
प्राइम की
विजेता
रेखा.
PRIME LEADER
PRIME GENIUS
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
PRIME RANK
PRIME MERIT
आ गए, उत्कृष्ट दर्जे के कम्पास बॉक्स. यह अचूक कामगिरी, संपूर्ण नियंत्रण एवं उत्कृष्ट कार्यकुशलता के लिए खास तौर पर तैयार किए गए हैं.
तो दीजिए अपने नन्हें-मुन्नें को प्राइम. जिसके सहारे वो चढ़ता जाए कामयाबी की सीढ़ियां, और बने विजेता.
प्राइम मेरिट
प्राइम रैंक
प्राइम जीनियस
प्राइम लीडर
◂ मैथमेटिकल ड्रॉइंग इन्स्ट्रुमेंट्स ▸
PIDILITE PRODUCTS
PID 63 95 HIN

समाचार - विशेषताएँ

अट्लांटिक महासमुद्र में छोटा-सा भारत

भारत के अध्यक्ष डा. शंकर दयाल शर्मा हाल ही में करीबियन देश के ट्रिनिडाड - टोबागो, मुख्य-अतिथि बनकर हो आये। भारतीयों के वहाँ गये एक सौ पचास साल पूरे हुए। इस अवसर पर संपन्न हुए जलसों में भाग लेने के लिए भारत के अध्यक्ष आह्वानित हुए। पहले पहल जो भारतीय वहाँ गये, उन्होंने १८४५, मई ३० को उस भूमि पर क़दम रखा।

इतिहास बताता है कि क्रिस्टफ़र कोलंबस ने अमेरिका को खोज निकाला। अमेरिका के पूर्वोत्तर के उस पार के ट्रिनिडाड द्वीप में इसी कोलंबस ने १४९८ में प्रवेश किया। इसके बाद यह स्पेन का उपनिवेश बना। १८०२ में वह ब्रिटेन के वश में आ गया। ट्रिनिडाड के समीप ही स्थित टोबागो द्वीप को भी ब्रिटेन ने अपने अधीन कर लिया। १८०९ में इन दोनों को अपना एक उपनिवेश बनाया।

इन दोनों द्वीपों में गन्ने की उत्पत्ति काफ़ी होती थी। वहाँ काम करने के लिए ब्रिटेन को कुलियों की ज़रूरत पड़ी। उस समय भारत पर अंग्रेज़ों का ही आधिपत्य था। इसलिए कलकत्ता, छोटा नागपूर आदि प्रदेशों से कुली वहाँ ले जाये गये। कलकत्ते के बन्दरगाह से 'फ़ीटलरोजक' नामक ज़हाज़ में २३० भारतीय भेजे गये। उनकी यात्रा सुदीर्घ रही। भविष्य के बारे में मन ही मन उन्हें भय लगने लगा। नेल्सन टापू पर इन कुलियों ने क़दम रखा, जो वर्तमान राजधानी पोर्ट आफ स्पेन से थोड़ी ही दूरी पर है। इसके बाद सत्तर सालों तक उत्तर प्रदेश, बिहार और दक्षिण भारत से कुली वहाँ बराबर भेजे जाते रहे। इसी प्रकार ब्रिटिशवाले अपने उपनिवेश अफ़्रीका से भी कुलियों को इस प्रदेश में भेजते रहे। ट्रिनिडाड, टोबागो की सम्मिलित जनसंख्या है २०,००,०००। उनमें भारतीय तथा अफ़्रीका की संख्या लगभग एक समान है।

वहाँ के भारतीयों ने अपने पूर्वजों के जन्म-स्थल को अब तक भुलाया नहीं है। क्योंकि जब वे उस द्वीप में गये, तब अपने साथ अपना पहनावा ही नहीं, बल्कि भाषा, आहार-पद्धतियाँ तथा धर्म-संप्रदाय भी वहाँ ले गये। यहाँ हिन्दी, बंगाली, पंजाबी तथा दक्षिण की चारों भाषाएँ बोलनेवाले भारतीय हैं। अलावा इनके, भोजपुरी, मैथिली, संथाली, नेपाली भाषा-भाषी भी यहाँ हैं। वहाँ के स्थलों के नाम रखे गये मथुरा, लखनऊ, कानपूर, चंदरनागूर, मद्रास, मलबार लान्डस, दिल्लीरोड, गोल्कोंडा आदि।

नूर हसन अली पहले पहल यहाँ पहुँचे भारतीय की संतान है। उसका कहना है "समुद्रों ने हमें अलग किया, परंतु हमारे हृदय तो एक साथ जुडे हुए हैं।" भारत के अध्यक्ष डा. शंकर दयाल शर्मा ने भी कहा "ट्रिनिडाड के साथ भारत के संबंध बहुत ही निकट हैं। इनके मन जुडे हुए हैं।"

शांत सास

गौरीपुर का काशीराम संपन्न व्यक्ति था। उसके दो बेटे थे केशव, माधव। दोनों मेहनती भी थे और अक़्लमंद थी। फिर भी काशीराम के मन को शांति नहीं थी। वह सदा बेचैन रहता था। इसका कारण था उसकी पत्नी शांता का झगडालू स्वभाव। वह तुनक मिज़ाज़ की थी। साथ ही बकबक भी हद से ज्यादा करती थी।

जहाँ कहने-सुनने के लिए कुछ भी नहीं, वहाँ भी वह अवश्य ही कुछ कहती। कोई ना कोई टीका-टिप्पणी करती।जहाँ कहने-सुनने के लिए छोटी-सी एक बात होती तो बस, निशाना ना चूकनेवाली बातों के बाणों से दूसरे के दिल को घायल कर देती। यह शांता की ख़ासियत थी। अपनी पत्नी के स्वभाव से भली-भांति परिचित काशीराम ने अपने बड़े बेटे केशव की शादी दूर के रिश्तेदार धर्मा की बेटी कमला से की। ऐसा करने का एक कारण भी था। उसने सोचा कि दोनों परिवार एक दूसरे को जानते हैं। कमला को भी मालूम हुआ होगा कि उसकी सास का कैसा स्वभाव है। अगर सास ने कुछ कह भी दिया तो कमला सह लेगी। हो सकता है, दोनों अपनी-अपनी सीमाओं को लांघकर ना जाएँ। किन्तु हुआ, बिल्कुल उसकी आशाओं के विपरीत। सास शांता बात-बात पर बहू कमला पर नाराज़ होती, उसे खरी-खोटी सुनाती। कमला चुप नहीं रह सकी। उसने अपने पति से स्पष्ट कह दिया कि अलग परिवार बसाने पर ही वह वापस आयेगी। यों कहकर अपने मायके चली गयी।

इसके कुछ दिनों बाद समधी धर्मा और काशीराम ने आपस में बातें कीं और इस निर्णय पर आये कि अलग परिवार बसाने में सबकी सुख-शांति है। यों बड़े बेटे ने उसी गाँव में अलग अपना परिवार बसाया। अब उसका, एक साल का बेटा भी है।

काशीराम मन ही मन इस बात पर दुखी

होता कहता था कि मैं अपने इकलौते पोते के साथ मन बहला नहीं पा रहा हूँ। इन परिस्थितियों में अपने दूसरे बेटे माधव की शादी करने में उसे ड़र लगने लगा था।

एक दिन पड़ोस के गाँव में रहनेवाले अपने दोस्त नारायण से मिलने काशीराम गया। ऐसे तो नारायण, काशीराम जैसा संपन्न तो नहीं था, पर था थोड़ा-बहुत संपन्न ही।

बहुत दिनों के बाद अपने घर आये हुए मित्र काशीराम को देखकर नारायण बहुत ही खुश हुआ। कुशल-मंगल की पूछताछ के बाद उसने अपनी पत्नी से स्वादिष्ट भोजन बनाने को कहा।

फिर दोनों मित्र झूले पर झूलते हुए मज़े से बातें करने में लग गये।

थोड़ी देर बाद एक आदमी वहाँ आया। उसके साथ एक नौकर भी था, जिसके कंधे पर एक भरी हुई गठरी थी। आते ही उसने नारायण से कहा, ''महाशय, बिटिया ने ज़रीवाली साड़ियाँ लाने को बार-बार कहा था। इसलिए उनके लिए बहुत ही अच्छी और रंग-बिरंगी साड़ियाँ ले आया हूँ''।

''बेटी विमला'' कहकर नारायण ने अपनी बेटी को पुकारा। विमला अंदर से जब बाहर आयी तब उस व्यापारी ने उससे कहा ''छोटी मालकिन, पिछली बार आपने पूछा था कि हथेली भर की ज़रीवाली श्रेष्ठ साड़ियाँ ले आना। ले आया हूँ।'' उसने नौकर से कहा ''गठरी खोलो और साड़ियाँ दिखाओ।''

नौकर गठरी खोलने ही वाला था। विमला ने व्यापारी को इशारे से बताया कि मत खोलो और यह कहकर अंदर चली गयी कि ''थोड़ा ठहरो मोतीराम, अभी आयी।''

थोड़ी ही देर में वह उखडे हुए रंग की एक पुरानी साड़ी लेकर वापस आयी और मोतीराम से कहा ''ज़रा इसे देखिये तो सही।''

उस साड़ी को देखते ही मोतीराम का चेहरा पीला पड़ गया। पर एक पल में अपने को संभालते हुए उसने कहा ''हाँ, साड़ी तो सस्ती व बेकार की है। इसे किससे आपने खरीदी?''

विमला मुस्कुराती हुई बोली ''आप ही के पास तो खरीदी थी। क्यों आपको विश्वास नहीं

हो रहा है?''

मोतीराम ने उन बातों को हवा में उड़ाते हुए कहा ''बिटिया मज़ाक कर रही है। यह मोतीराम तो ऐसी ख़राब साड़ियाँ बेचता ही नही।''

विमला ने तब गंभीरता से कहा ''मोतीरामजी, पिछली बार जब आये थे, तब यह कहकर आपने यह साड़ी मेरे पल्ले बाँध दी कि बहुत ही अच्छी साड़ी है। इसके लिए भारी रक़म भी आपने मुझसे वसूल की। एक बार धोया कि नहीं, रंग उखड़ गया। याद रखियेगा, धोखा केवल एक ही बार कामयाब हो सकता है, लेकिन ईमानदारी जीवन के अंत तक कामयाब रहेगी। इस सच्चाई को अच्छी तरह याद रखियेगा। अब आप जा सकते हैं।''

मोतीराम घबराता हुआ कुछ कहने ही जा रहा था कि विमला ने उसे टोकते हुए कहा ''मोतीरामजी, भगवान ने मनुष्य को बोलने की शक्ति प्रदान की। अच्छाई को बातों के द्वारा व्यक्त करने के लिए। ना कि वाचाल बनकर ज़बान के बल पर अपना उल्लू सीधा करने के लिए। ऐसा करके अपने को अक़्लमंद समझना बेवकूफ़ी ही है। आपको और कहने की ज़रूरत नहीं। आप जा सकते हैं।''

हक्का-बक्का मोतीराम अपना मुँह सीकर वहाँ से चलता बना। काशीराम यह सब कुछ ध्यान से देख रहा था। उसने विमला से पूछा ''एक बड़े आदमी से किसी झिझक के ऐसी बातें करने में तुम्हें कोई संकोच नहीं हुआ बेटी? तुम्हें ड़र नहीं लगा?''

विमला ने हँसते हुए कहा ''जब हमने कोई ग़लती नहीं की, तब संकोच या भय का सवाल ही कहाँ उठता है? निर्दोष अनावश्यक ही अगर भयभीत हो जाएँ तो दोषी उसका फ़ायदा उठायेगा और अपनी हदों को पार कर जायेगा।''

काशीराम उसकी बातों को सुनते हुए सोच में पड़ गया। वह शाम तक अपने दोस्त से बातें करता ही रहा, परंतु अपने ही आप सोचता ही रहा।

लौटने के पहले एक निर्णय लेकर उसने अपने मित्र से कहा ''नारायण, मैं तुमसे कुछ माँगना चाहता हूँ।''

चकित हो नारायण ने कहा "नित्संकोच माँगो। संकोच क्यों? तुम कुछ माँगो और मैं ना दूँ, यह तो सपने में भी नहीं हो सकता। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हारी माँग कभी भी अनावश्यक या अर्थहीन नहीं होती। तुम्हारी माँग सहर्ष पूरी करूँगा।"

"तुम्हारी बिटिया को अपनी बहू बनाना चाहता हूँ" काशीराम ने कहा। यह बात सुनते ही नारायण काशीराम के गले मिला और कहा "काशीराम, यह तो मेरे लिए वर है, इसे माँग का नाम क्यों दे रहे हो ? तुम्हारी बहू बनने से बढ़कर मेरी बेटी के लिए और सौभाग्य क्या हो सकता है ? यह तो मेरी बेटी का भाग्य है।"

काशीराम ने कहा "घर पहुँचते ही पूरी बात अपनी पत्नी और बेटे को बताऊँगा। फिर मुहूर्त निकालेंगे। अपनी पत्नी और बेटी से भी यह बात कह रखना।"

घर पहुँचते ही काशीराम ने अपने दूसरे बेटे माधव से पूरी बात बतायी और कहा "बेटे, तुम्हारी भाभी थोड़ा-बहुत कोमल स्वभाव की है, इसलिए तुम्हारी माँ का ही आधिक्य रहा। उन्होंने अपना अलग घर बसा लिया। तुम्हारी होनेवाली पत्नी चुस्त है, अक़्लमंद है। मुझे उम्मीद है कि वह तुम्हारी माँ को सुधारेगी। विमला के व्यवहार ने मेरी आशा नामक पौधे में पानी ड़ाला है। मुझे आशा है कि उसकी वजह से तुम्हारे भैय्या और भाभी भी घर लौट सकते हैं।"

इसके बाद वधु को देखने के लिए जब सब नारायण के घर गये तब नारायण ने स्पष्ट कह दिया कि दहेज में वह क्या और कितना देना चाहता है। शांता भी उससे सहमत हुई। इसलिए शादी शीघ्र ही संपन्न हुई और विमला बहू बनकर उनके घर आयी।

बहू बनकर आने के कुछ ही दिनों में बिल्ली और चूहे पर भी अपना क्रोध दिखानेवाली अपनी सास को नख से शिख तक उसने जान लिया। ग़लती अपनी ना होते हुए भी सास के व्यंग्य-बाणों को विमला चुपचाप सहती रही। उसने अपनी ज़बान तक नहीं खोली। एक शब्द तक ना कहा। ना ही उसने अपने व्यवहार में कोई परिवर्तन दिखाया। काशीराम को अपनी बहू के

व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, नयी-नयी आयी है, पुरानी जब हो जायेगी, तब दिखायेगी अपना रंग। उसने एक साल तक इंतज़ार किया। किन्तु दोनों के स्वभावों में कोई परिवर्तन नहीं आया। शांता व्यग्य-बाण बरसाती ही रही किन्तु विमला ने अपनी सहनशक्ति कभी नहीं खोयी। एक दिन जब उसकी पत्नी मंदिर गयी तब काशीराम ने अपनी बहू विमला से इसका ज़िक्र किया।

काशीराम ने अपनी बहू से कहा ''बहू, जब से आयी हो, तब से ध्यान से देख रहा हूँ। तुम्हारी सास तुम्हें अनावश्यक सता रही है। फिर भी तुम मुँह सीके बैठी हो। मुझे संदेह हो रहा है कि क्या तुम वही लड़की हो, जिसने, उस दिन कपड़ों के व्यापारी को खरा-खोटा सुनाया, बिना संकोच और झिझक के बोली।''

अपने ससुर की बातों पर मुस्कुराते हुए विमला ने कहा ''उस दिन कपड़ों के व्यापारी से नित्संकोच मैं इसलिए बोली कि हम दोनों में कोई रिश्ता नहीं था। वह मेरा कोई सगा नहीं था। पर यहाँ जो मुझपर अपना अधिकार जता रही है, वह और कोई नहीं, बल्कि मेरे पति की माँ है। उनसे हमारे जो नाते हैं, वे शाश्वत हैं। उन्हें कुछ कहने से वे नाते मुझे रोक रहे हैं। जहाँ हम प्रेम चाहते हों, संबंध सुचारू रूप से बनाये रखना चाहते हों, वहाँ शांति तथा सहनशक्ति की आवश्यकता है। संघर्ष कदापि उचित नहीं।''

बहू के सद्गुणों पर काशीराम की आँखों में आँसू आ गये। उसने बड़े प्यार से कहा ''बेटी, उम्र में छोटी हो किन्तु तुमने ऐसी उत्तम बातें कीं, जो बूढ़ों को भी लज्जित करती हैं। उनके लिए तुम्हारी बातें एक सबक़ है। पर मुझे ड़र है कि तुम्हारी अच्छाई, तुम्हारी सास की दृष्टि में तुम्हारी कायरता है। इससे और प्रेरित होकर वह तुम्हारी लापरवाही करेगी। तब शायद तुम्हारी सहनशीलता पराकाष्ठा पर पहुँच जायेगी। शायद तुम्हारी सहनशक्ति की बाँध टूट जाए। मेरी तो आशा भी कि तुम अपनी सास को सबक़ सिखाओगी। उसकी बुद्धि को ठिकाने लगाओगी। पर अब समझ गया हूँ कि मूर्खता आसानी से दूसरों को दुख पहुँचा सकती है,

किन्तु विवेक नहीं। जो होना है, होकर रहेगा। हम तो अपने भाग्य को ही कोस रहे हैं। ऐसी सुशील बहू के कष्टों को देखकर दिल दुखता है। चुप रहना पड़ता है।'' उससे कुछ और कहा नहीं गया। बाहर चला गया।

जब वह बाहर जा रहा था, तब मंदिर से लौटी शांता सामने आयी। किन्तु काशीराम ने उससे बात तक नहीं की, मानों वह उसका चेहरा देखना भी नहीं चाहता।

उस दिन रात को भोजन के समय शांता बिल्कुल ही शांत थी। उसने यथावत् अपनी नाराज़ी नहीं दिखायी। उसने काशीराम से कहा ''कल अच्छा दिन है। क्या कल आपको फुरसत है ?''

चिढ़ते हुए काशीराम ने पूछा ''क्यों''

शांता ने सिर झुकाते हुए कहा ''हम दोनों कल अपने बड़े लड़के, बहू और पोते को घर ले आयेंगे।''

पत्नी की बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए काशीराम ने कहा ''क्या कहा ? फिर एक और बार कहो।''

शांता गद्‌गदाते स्वर में बोली ''आज मंदिर में भजन का कार्यक्रम नहीं था। इसलिए जल्दी वापस आ गयी। मैंने आप दोनों की बातें सुन लीं। अब तक अपनी मूर्खता के कारण समझ नहीं पायी कि मैंने आप सबों के मनों को कितना दुखाया है, कितनी ठेस पहुँचायी है।

मेरे प्रति आप लोगों के दिलों में कितना कड़ुवापन है। विमला ने ठीक ही कहा कि प्यार और बंधन चाहते हों तो आवश्यक है कि मनुष्य का व्यवहार आत्मीयता से भरा रहे।''

काशीराम ने कल्पना तक नहीं की कि उसकी पत्नी में यों कायापलट हो जाएगा। उसने बहुत ही खुश होते हुए कहा ''इतने लंबे अर्से के बाद समझ पायी हो कि प्रशांत जीवन के प्रधान सूत्र क्या हैं। सास का शांत स्वभाव परिवार के सुख-शांति की नींव है। वह भगवान का दिया हुआ वर है।''

''इतनी छोटी-सी बात उसी समय कह देते। जब हमारी बड़ी बहू हमारे घर आयी थी, तो अपने को सुधार लेती। अब तक क्यों चुप्पी साधे बैठे रहे ?'' हँसती हुई शांता ने कहा।

हुष......हुष

भयंकर आँधी थी। उनकी नाव डूब रही थी। उसमें जो तीन आदमी थे, लकड़ी के पाटे की सहायता लेकर थोड़ी देर बाद एक द्वीप पर पहुँचे, जहाँ कोई रह नहीं रहा था। उस द्वीप में फलों से लदे कितने ही वृक्ष थे। एक छोटी-सी नदी थी। उस नदी में अनगिनत मछलियाँ थीं। उन्हें खाते हुए जुआ खेलते हुए, वे तीनों वहीं रहने लगे।

उन तीनों में से एक था ग्रामप्रमुख, दूसरा किसान और तीसरा था एकदम आवारा।

एक दिन जब वे तीनों समुद्र के किनारे जा रहे थे, तब ग्रामप्रमुख को रेत में एक बोतल दिखायी पड़ी। किसान ने उसे उठाकर अपने हाथ में लिया। आवारा ने उसके ढक्कन को निकाला। लंबे अर्से से उसी में बंद भूत ठठाकर हँसता हुआ बाहर कूद पड़ा।

उसे देखकर तीनों भागने लगे। भूत ने उन्हें रुकने के लिए कहा और कहा "आप लोगों ने मुझे बोतल से निकाला है, इसलिए आप लोगों की इच्छाएँ पूरी करूँगा। तुम तीनों अपने मन में एक-एक इच्छा सोच लो।"

ग्रामप्रमुख ने अपने मन में सोच लिया "ग्रामवासियों के झगड़ों का निपटारा करने के लिए मुझे तक्षण ही गाँव पहुँचना हैं।"

भूत ने तक्षण ही 'हुष' कहा तो ग्रामप्रमुख ग़ायब हो गया। किसान ने सोचा "फ़सल को काटने का समय आ गया। अच्छा होगा, मैं अपने खेत में रहूँ।"

भूत ने 'हुष' कहा तो किसान भी ग़ायब हो गया। आवारे ने सोचा "जुआ खेलने वे दोनों भी यहीं रहें तो कितना अच्छा होगा।"

भूत ने कहा "हुष, हुष।"

तीनों यथावत् समुद्र के किनारे थे। अब भूत ग़ायब हो गया। - किरण

(मोहन ट्रोय नगर के राजा वर्धन का पुत्र था। उसने ग्रीक राजा प्रताप की पत्नी भुवनसुंदरी का अपहरण किया। उसे पाने के लिए ग्रीक नौकाओं में निकल पड़े। ट्रोय-नगर को घेरा। दस सालों तक लड़ाई होती रही। काठ के विराट घोड़े में छिपकर ट्रोयनगर में ग्रीकों ने प्रवेश किया। नगर पर विजय पायी। फिर उसे जला भी डाला। 'भुवनसुंदरी' नामक ग्रीक पुराण-गाथा में आप सबने यह पढ़ा है।

ट्रोय पर आक्रमण करनेवाले ग्रीक योद्धाओं में रूपधर भी एक था। ज्योतिषियों ने उसके युद्ध में जाने के पहले ही कह दिया था कि वह बीस सालों तक स्वदेश नहीं लौटेगा। उन बीस सालों में से दस साल तो ट्रोय के घेराव में ही लग गये। शेष दस सालों में रूपधर के जीवन में बड़ी ही विचित्र घटनाएँ घटीं। उन विचित्र घटनाओं को चित्रित किया जा रहा है इस महीने से)

रूपधर की नौकाएँ ट्रोय तट को छोड़कर जब से निकलीं, तब से उल्टी हवाएँ चलने लगीं। नौकाओं को जाना था, दक्षिण की दिशा में। किन्तु वे उत्तर की ओर चल पड़ीं और इस्मरोस तट पर पहुँचीं। यह किकोलियनों के रहने की जगह थी।

रूपधर की सेनाएँ नगर पर टूट पड़ीं और उसे ध्वंस कर दिया। सैनिकों ने नगर की स्त्रियों, पशुओं और संपत्ति को आपस में बाँट लिया। रूपधर ने उनसे कहा "जितनी जल्दी हम यहाँ से निकल पड़ेंगे, उतना ही अच्छा है।" पर सैनिक उसकी बातों को सुनने और उनपर विचार करने की स्थिति में नहीं थे। क्योंकि नगर में उन्हें बहुत ही रुचिकर तथा विचित्र पेय मिला। सबने

नौकाओं में कूद पड़े और वहाँ से निकल भागे।

समुद्र में थोड़ी दूर जाने के बाद पूर्वी दिशा से ज़ोर की हवा चलने लगी। भूमि और समुद्र दोनों तरफ़ों से नीले मेघों से आकाश आच्छादित हो गया। अंधेरा छा गया। उस ज़ोर की हवा के कारण पाल उभर आये और वायुवेग से नौकाएँ दिशाहीन जाने लगीं।

देखते-देखते प्रबल हवा के सामने पाल टिक नहीं पाये और फटते जाने लगे।

रूपधर को ड़र लगा कि किसी के भी प्राण की ख़ैर नहीं। उसने सैनिकों को आदेश दिया कि पाल उतार दिये जाएँ और नौकाएँ तट पर लायी जाएँ। बड़ी मुश्किल से वे नावों को किनारे पर ले आ पाये। दो दिनों तक आँधी के रुक जाने की प्रतीक्षा की। दोनों दिन उन्होंने सूरज का प्रकाश ही नहीं देखा।

तीसरे दिन सबेरे जब उन्होंने अरुणोदय देखा, तो उनकी जान में जान आयी। उन्होंने पाल के स्तंभों को फिर से उठाया और नये पाल भी बाँधे। तब उनके प्रयत्नों के बिना ही नावें वायुवेग से पानी में जाने लगीं।

चार दिनों की यात्रा के बाद रूपधर की नौकाएँ मलियाअग्र पहुँचीं। उसके उत्तर में जाने पर रूपधर स्वदेश इथाका पहुँच सकता था।

हवा का जोर भी कम होता गया। रूपधर ने आज्ञा दी कि नौकाएँ आगे बढ़ें। पर इतने में फिर से ज़ोर की हवा चलने लगी। नौकाओं पर मल्लाहों का वश ना रहा। वे कितीरा की तरफ़

खूब पिया और समुद्री तट पर जानवरों को जलाकर खाने के प्रयत्नों में तल्लीन हो गये।

इतने में नगर से भागे किकोनियन दूसरे गाँवों में गये। वहाँ से वे असंख्य योद्धाओं को ले आये। इनमें से बहुत से ऐसे योद्धा थे, जो रथ में खड़े होकर लड़ने की शक्ति रखते थे। ज़रूरत पड़े तो ज़मीन पर भी खड़े होकर वे साहसपूर्वक युद्ध करने की शक्ति रखते थे।

सबेरे-सबेरे किकोनियन योद्धा टिड्डियों के दल की तरह रूपधर की सेना पर टूट पड़े। घमासान लड़ाई हुई। किकोनियनों की संख्या अधिक थी। समय के साथ-साथ रूपधर की सेना की संख्या कम होती गयी। बहुत से ग्रीक सैनिक मारे गये। बाक़ी, विलंब किये बिना

जाने लगीं। नौ दिन और नौ रातों तक वायुदेव रूपधर की नौकाओं से गेंद की तरह खेलता रहा। दसवें दिन वे एक किनारे पर पहुँचे। किन्तु अधिक दिनों तक वे यहाँ नहीं रह पाये। सैनिक मन ही मन झल्ला भी रहे थे। वे स्वदेश शीघ्र ही लौटना चाहते थे। किन्तु वातावरण इसके अनुकूल नहीं था। उन्हें भय होने लगा कि मालूम नहीं कि कब तक हम इस प्रकार घूमते ही रहेंगे। उन्हें अपने परिवार की चिंता सताने लगी। इस विलंब पर वे रूपधर को जिम्मेदार भी ठहरा नहीं सकते। क्योंकि वातावरण के कारण वह भी असहाय था।

इस तट पर रहनेवाले लोग एक प्रकार के फल खाते हैं। वे शहद की तरह मीठे होते हैं। उनमें ना ही बीज होते हैं ना ही गुठलियाँ होती हैं। उनको खाने से आदमी पुरानी बातें भूल जाता है। अफ़ीम खाये हुए आदमी की तरह मस्त रहता है। अपनी दुनिया में खो जाता है। उसे किसी बात की चिंता नहीं रहती। अपने परिवार या संतान की उसे याद नहीं आती। जो सामने है, उसी से बातें करता रहता है और फल खाता जाता है। उसी आनंद में अपने को लुटाता है। उसकी बुद्धि मंद पड़ जाती है और वह सोचने की शक्ति खो देता है।

यह बात रूपधर को मालूम नहीं थी। उसने और उसके अनुचरों ने तट पर खाना बनाया और खाया। बाद रूपधर ने तीन सैनिकों को बुलाया और कहा "जाओ और देखकर आओ कि इस
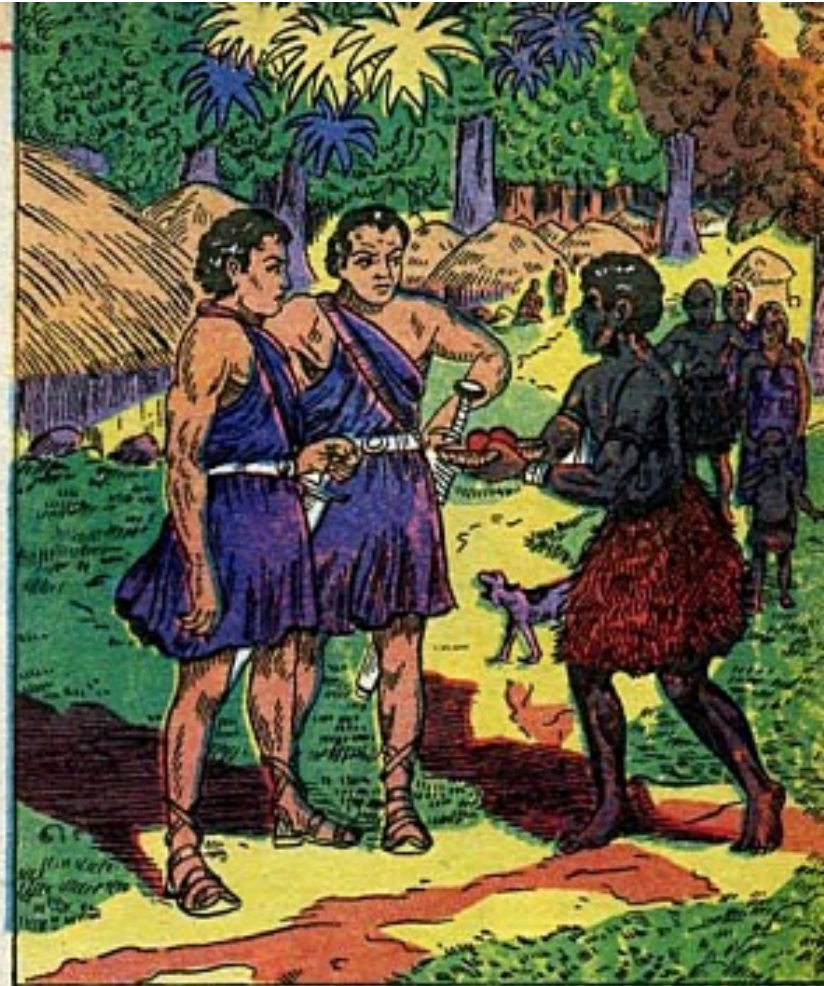
तट पर किस प्रकार के लोग रहते हैं।"

वहाँ के लोगों ने इन ग्रीकों की कोई हानि नहीं पहुँचायी, उल्टे उन्हें खाने के लिए फल दिये। उन्हें खाते ही रूपधर के आदमी भूल गये कि हम किस काम पर यहाँ आये हैं। वे उन फलों का मज़ा लूटने लगे।

बहुत-सा समय बीत जाने के बाद भी जब उसके आदमी वापस नहीं लौटे, तो अपने कुछ सैनिकों को लेकर उन्हें ढूँढते हुए रूपधर वहाँ आया। वहाँ आने पर उसे असली बात मालूम हुई। वहाँ की जनता ने उसे भी खाने के लिए फल दिये, परंतु रूपधर ने नहीं खाया। उसे शंका हुई कि इन फलों के कारण ही उसके सैनिकों की ऐसी स्थिति हुई है। उन सैनिकों को उसे

उन्हें कुछ भी ठीक तरह से दिखायी दे नहीं रहा था। उन्होने निर्णय कर लिया कि जो भी हो, कल देखा जायेगा। उन्होंने पाल उतार दिये और समुद्र के किनारे आकर रेत में मस्त सो गये।

सबेरे जब उठे तो लगा कि यह प्रदेश कोई द्वीप है। वे प्रकृति के सौंदर्य का अवलोकन करते हुए खूब घूमते रहे। उन्हें एक प्रकार से आनंद हो रहा था। क्योंकि उन्हें लगा कि हम यहाँ सुरक्षित हैं। यहाँ हमारे कोई शत्रु भी नहीं हैं, जो हम पर आक्रमण कर बैठें। लड़ते-लड़ते वे थक भी गये थे। लड़ाई से उन्हें नफ़रत हो गयी थी। इस शांत व सुँदर वातावरण में वे सुख की साँस लेने लगे।
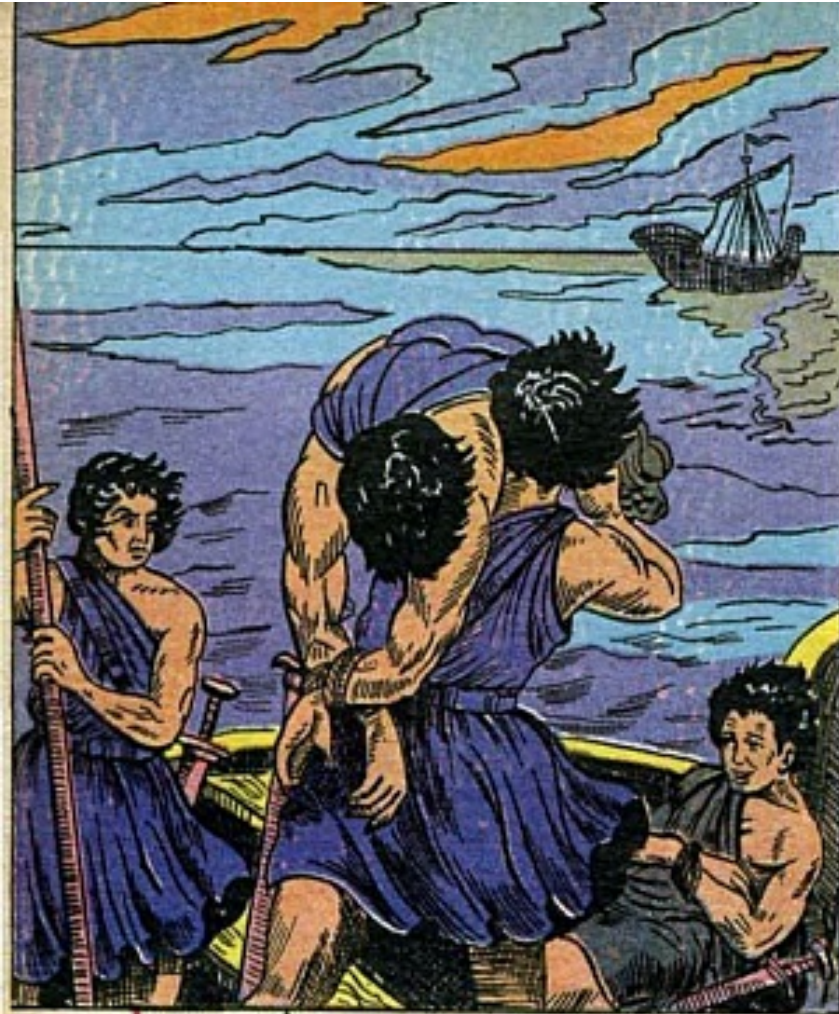
ज़बरदस्ती अपनी नौकाओं के पास ले आना पड़ा। वे चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे कि हम तुम्हारे साथ नहीं आयेंगे। हम यहीं रहेंगे। हमें छोड़ दो। हमें यही अच्छा लगता है।

रूपधर ने उन्हें रस्सियों से बंधवाया और नौकाओं में ड़लवा दिया। वह समझ गया कि अभी और यहाँ ठहरना खतरनाक है। वह अपने सैनिकों के साथ तक्षण ही नौकाओं में निकल पड़ा। थोड़े दिनों तक वे समुँदर में यात्रा करते रहे। एक दिन एक समुद्री तट पर वे पहुँच गये। ग्रीकों को मालूम नहीं था कि वे किस प्रदेश पर आकर रुक गये। क्योंकि आकाश में चाँद था, पर वह घने मेघों से घिरा हुआ ता। अलावा इसके, समुद्र पर कुहरा फैला हुआ था। अतः

उस द्वीप में तरह-तरह के अनेकों फल-वृक्ष थे। असीम अंगूर की लताएँ फैली हुई थीं। भूमि बड़ी ही उपजाऊ थी। किन्तु कहीं भी खेती होती-सी दिखाई नहीं दे रही थी। जल भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था। इसलिए हल चलाये बिना ही अनेकों प्रकार के अनाजों की उत्पत्ति की जा सकती है।

अपनी नौकाओं को छोड़कर बहुत दूर तक जाने के पहले ही उन्हें जंगली बकरियाँ दिखायी पड़ीं। वे तुरंत अपनी नौकाओं के पास दौड़े और धनुष-बाण, बर्छियाँ आदि आयुध ले आये। उनसे उन्होंने कुछ बकरियों को मारा और पकाकर दिन भर मज़े से खाते रहे। रूपधर के साथ बारह नौकाएँ थीं। नौ-नौ बकरियों के हिसाब से हर एक नौका को मिलीं। उस दिन

वे अपनी नौकाएँ छोड़कर नहीं गये। उन्होंने वहाँ से देखा कि दूरी पर प्राणी रह रहे हैं। शाम को उन्होंने देखा भी कि कहीं-कहीं से रसोई-घरों से निकलनेवाला धुआँ निकल रहा है। बकरियों और भेडों की आवाज़ें भी उन्हें स्पष्ट सुनायी दे रही थीं।

सबेरा होते ही रूपधर ने अपने आदमियों को बुलाकर कहा "मैं कुछ सैनिकों के साथ इस नौका में बैठकर उस द्वीप में जाऊँगा और देख आऊँगा कि वहाँ के निवासी सभ्य नागरिक हैं या पहाड़ी जाति के। जानने के बाद निर्णय लेंगे कि क्या करना चाहिये। जब तक मैं नहीं लौटूँगा, तब तक तुम लोग यहाँ से हिलो मत। नौकाओं की रक्षा करते रहना।"

थोड़ी दूर जाने के बाद रूपधर ने देखा कि बहुत ही दूरी पर एक टीले पर गुफ़ा है। लताएँ उसपर फैली हुई हैं। उसके चारों ओर चहारदीवार जैसी एक दीवार है। इसमें बड़े-बड़े पहाड़ी पथ्थर और वृक्षों के तने हैं।

रूपधर ने अपनी नौका गुफ़ा के सामने रोकी। अपने नाविकों में से बारह साहसी वीरों को चुना और बकरी के चमड़े की एक थैली में विचित्र पेय भरकर गुफ़ा की तरफ़ निकल पड़ा।

वह अद्‌भुत पेय ता। रूपधर ने जब इस्मरोस पर चढ़ाई की थी, तब वहाँ के एक पुजारी, उसकी पत्नी व उसकी संतान को नहीं मारा। उन्हें छोड़ दिया। फलस्वरूप उस पुजारी ने अनेकों थैलियों में अद्‌भुत शराब भरकर उसे भेंट के रूप में दीं। चाँदी और सोना भी दिया। उस पुजारी ने कहा कि इस शराब में इससे बीस

गुना पानी अधिक मिलाकर पीता हूँ। तभी उसकी सुगंध व माधुर्य का पता चलता है।

रूपधर और उसके साथी जल्दी ही गुफ़ा के पास पहुँचे। किन्तु गुफ़ा में कोई नहीं था। वह बहुत ही बड़ी गुफ़ा थी। वहाँ बहुत-सी बकरियाँ थी। बड़े-बड़े बरतन दूध से भरे हुए थे। रूपधर के अनुचरों ने कहा "यह दूध और मलाई लेकर चलते हैं" एक ने कहा "हमें कोई रोकनेवाला नहीं है। इन बकरियों को भी लेकर जाएँगे।"

किन्तु रूपधर इसके लिए तैयार नहीं था। उसने उन्हें ऐसा करने से मना किया। उन सबने पेट भर मलाई खायी। फिर वे उस गुफ़ा में रहनेवाले प्राणी का इंतज़ार करने लगे। रूपधर को मन ही मन शंका हो रही थी कि शायद यहाँ मनुष्य नहीं रहते। पता नहीं, यह किस प्रकार के प्राणी का निवास-स्थल है। वह मनुष्य की तरह बोल पायेगा कि नहीं। कहीं वह भयंकर प्राणी हो तो शायद हम पर हमला कर दे और हमें नष्ट पहुँचाये। इन शंकाओं में डूबा हुआ वह इस निश्चय पर पहुँच गया कि जो भी हो देखा जायेगा। रूपधर स्वभावतः निडर था। वह किसी भी स्थिति का सामना करने की शक्ति रखता था। उसकी बुद्धि भी पैनी थी। अपनी बुद्धि के बल पर ही तो उसने काठ के घोड़े का निर्माण करवाया और ग्रीकों को विजय दिलायी। साहसी रूपधर भी अपने इतर सैनिकों के साथ आगंतुक की प्रतीक्षा करने लगा।

आख़िर वह प्राणी आ ही गया। ग्रीकों ने पहले उस प्राणी को देखा नहीं था। बहुत ही बड़ी ध्वनि के साथ कोई चीज़ गुफ़ा में आकर गिरी। वह थी सूखी लकड़ियों की एक गठरी। फिर इसके बाद असली प्राणी झुककर गुफ़ा में आया। बिल्ली को देखकर चूहे जिस तरह दौड़ पड़ते हैं, उसी तरह ग्रीक सैनिक उस आदमी को देखकर तितर-बितर हो गये। किन्तु रूपधर अन्यों की तरह भयभीत नहीं हुआ। वह भी छिप इसलिए गया, क्योंकि वह देखनाचाहता था कि आखिर यह कौन है? क्या इसके साथ कोई और हैं? इसमें कितनी शक्ति है। उससे लड़कर जीतना संभव है? अगर वह हमला कर बैठे तो क्या करना चाहिये?

प्राणी जो आया था, ताड़ के पेड़ के समान

ऊँचा था। उसके माथे पर एक ही आँख थी, जो आग की तरह जल रही थी।

उस आदमी ने बकिरियों के एक बड़े झुंड को गुफ़ा में हाँका। फिर एक बहुत ही बड़े पथ्थर से गुफ़ा को ढ़क दिया। वह पथ्थर इतना भारी था कि चालीस बैल भी उसे हिला नहीं सकते। फिर उसने बकरियों का दूध दुहा।

वह आदमी फाललोचन जाति का था। इस जाति के बहुत से लोग इस प्रांत में हैं। इनका कोई सामाजिक जीवन नहीं होता। अपने सुख-दुख अपने ही तक सीमित हैं। हर कोई अपनी-अपनी गुफ़ा में ही रहता है। दूसरे के बारे में वे कभी सोचते तक नहीं।

ये फाललोचन खेती नहीं करते। वहाँ की ज़मीन बहुत ही उपजाऊ है, इसलिए खेती किये बिना ही आहार-पदार्थ उन्हें मिल जाते हैं।

ये राक्षस साल में एक बार फ़सल काटकर लाते हैं। बाक़ी समय भेड़ों और बकरियों को चराने के लिए मैदान में ले जाते हैं। पौष्टिक घास चरकर वे जंतु बहुत ही हृष्ट-पुष्ट होते हैं। बहुत ही दूध देती हैं। उन्हें चराने के अलावा इन फाललोचनों को कोई काम नहीं आता।

यद्यपि ये राक्षस पीढियों दर पीढ़ियों से समुद्र के किनारे रह रहे हैं, परंतु इन्हें छोटी नौकाएँ बनाना भी नहीं आता। अपना निवास-स्थल छोड़कर समुद्र की यात्राओं से ये अवगत नहीं हैं। इस कारण नागरिकता से ये बिल्कुल ही अनभिज्ञ हैं और इस प्रकार का दुर्भर जीवन बिता रहे हैं।

ग्रीकों ने जिस गुफ़ा में प्रवेश किया, उस गुफ़ा के फाललोचन ने दुहे हुए दूध में से आधा भाग मलाई बना दी और एक टोकरी में रख ली। बाकी दूध शायद पीने के लिए बरतनों में उँडेल दिया।

फिर इसके बाद उसने चूल्हा जलाया। उस आग में उसकी अकेली आँख को ग्रीक दिखायी पड़े। वह एकदम चौकन्ना हो गया।

राक्षस अपनी आँख को भयंकर रूप से इधर-उधर घुमाते हुए पीछे मुड़कर चिल्ला पड़ा "तुम लोग कौन हो ?" उसकी चिल्लाहट से गुफ़ा प्रतिध्वनित हो गयी।

(सशेष)

'चन्दामामा' की ख़बरें

जुड़वें बच्चों की योग्यता

केरल प्रांत के एरणाकुलम में तीन बच्चे एक साथ पैदा हुए। उनके नाम हैं - महिषि, मनोज, माया। इस साल एस.एस.एल.सी की जो परीक्षाएँ हुईं, उनमें तीनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। दो बेटों ने

विशिष्टता पायी। इनकी माँ प्रोफेसर हैं तो पिता लेखा-जोखा के अफ़सर।

अंतरिक्ष में अमेरिका का रिकार्ड

८५ दिनों तक अमेरिका के व्योयगामी नार्मन थागार्ड ने अंतरिक्ष में रहकर जून, ६ को एक नया रिकार्ड स्थापित किया। इसके पहले अमेरीका का जो व्योयगामी अंतरिक्ष में गया, ८४ दिन, एक घंटा, सोलह मिनिट तक रहकर लौटा। अंतरिक्ष में जो रहना चाहते हैं, उन्हें रूस से स्थापित वहाँ के 'स्पेस स्टेशन' में ही रहना होगा। नार्मन थागार्ड वहाँ जुलाई तक रहेगा। जब दूसरा व्योमगामी वहाँ पहुँचेगा, तब वह वापस लौटेगा। कोई भी जाए, पर रूस के व्योमगामी वालेरी पोलिया के रिकार्ड को तोड़ना असंभव लगता है। वह वहाँ ४३९ दिन रहा और पिछले मार्च में ही लौटा।

नाक की धार

कठफोड़वा अपनी पैनी धारवाली नाक से पेड़ों की छाल को चुभो-चुभोकर कीडे-मकोड़ों को खाती है। साधारणतया यह चिड़िया दूसरी वस्तुओं को नही छूती। पर, हाल ही में अमेरिका की दो चिड़ियाँ केनेडी के अंतरिक्ष-केंद्र में स्थित व्योयनौका के टॉक के ऊपरी भाग में छेद करने लगीं। दोनों ने मिलकर १० से.मी की चौड़ाई वाले छेद किये। इस वजह से तत्संबंधी अधिकारियों ने व्योमनौका के प्रयोग को मुल्तवी किया। इसके बाद जब उन्होंने ग़ौर से देखा तो उन्हें ज्ञात हुआ कि इन दोनों पक्षियों ने ''लान्ड प्याड'' में अपना घोंसला बनाया।

घायल सूपरमेन

कोई ऐसा बालक नहीं होगा, जो 'कामिक्स' की किताबों में छपनेवाले सूपरमान की कहानियाँ नहीं जानता हो। इसकी कहानियाँ बालक-बालिकाएँ बड़े उत्साह से पढ़ते हैं। ऐसे ही अजेय सूपरमान का पात्र सिनिमाओं में अदा करता है क्रिस्टफर रीन। पिछले मई के आख़िरी हफ़्ते में एक दुर्घटना में यह घायल हुआ। घोड़े पर सवारी करते हुए यह नीचे गिर गया, जिससे उसका गला टूट गया। अब यह ख़तरे से खाली है। डाक्टरों का कहना है कि यह जल्दी ही ठीक हो जायेगा।
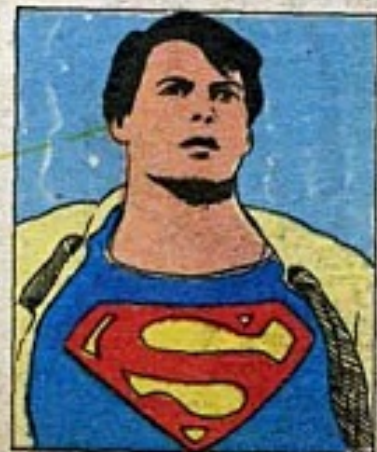
कवि चंद्रशेखर

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर ड़ाल लिया। यथावत् मौन साधे श्मशान की ओर बढ़ा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, इस समय तो तुम्हें अंतःपुर में रहकर सुख भोगना था, विश्राम करना था, पर तुम श्मशान में हो और कठोर परिश्रम कर रहे हो। इसे मैं तुम्हारी महानता मानूँ, या अविवेक। मैं स्वयं निर्णय पर आ नहीं पा रहा हूँ। तुम्हें समझाते-समझाते मैं थक गया हूँ, और तुम? तुम तो थकने का नाम ही नहीं ले रहे हो। साधारण प्रजा की दृष्टि में महान दिखने और लगने वाले व्यक्ति भी कभी-कभी अविवेकपूर्ण काम करते हैं। मूर्खता से भरा व्यवहार करते हैं। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें एक राजा और एक कवि की कहानी सुनाता हूँ। थकावट दूर करते हुए ग़ौर से सुनो।" फिर बेताल यों कहने लगा।

बैताल कथा

बहुत ही पहले कौशांबी देश के एक कुग्राम में चंद्रशेखर नामक युवक था। उसने समस्त शास्त्र-ग्रन्थों का अध्ययन तो नहीं किया पर सुँदर आशुकविताएँ सुनाता था। जो भी उससे कहता था कि एक कविता सुनाओ, तो वह फटाक् से कविता सुना देता था। उसे सोचने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

चंद्रशेखर एक ग़रीब ब्राह्मण का बेटा था। जिस-जिसने उसकी कविताएँ सुनीं, उन सबने उसे सलाह दी कि कौशांबी के राजा विजय भूपति के पास जाओ और अपनी कविताएँ सुनाओ। वे अवश्य ही तुमपर प्रसन्न होंगे और तुम्हें राजाश्रय देंगे।

किन्तु कौशांबी राज्य में एक परिपाटी थी। कौशांबी का हर कलाकार राजा के पास जाने के पहले अपने निकट के किसी ज़मींदार के आश्रय में जाता था। उस ज़मींदार के संस्थान में कुछ दिनों तक रहने के बाद उस-उसकी योग्यता के आधार पर जमींदार स्वयं ही उन्हें राजा के पास भेजता था। चंद्रशेखर चाहता नहीं था कि परंपरागत इस परिपाटी को तोड़ूं, इस पद्धति का उल्लंघन करूँ और सीधे राजा के पास चला जाऊँ। इसलिए उसने समीप ही के चक्रधरपुर के ज़मींदार के यहाँ आश्रय पाने का निर्णय लिया। पिता से निर्णीत शुभ मुहूर्त पर वहाँ जाने निकल पड़ा।

जब चंद्रशेखर ज़मींदार वीरवर्धन के भवन के पास पहुँचा तब उसने देखा कि वहाँ सब कुछ सूना-सूना है। उसे लगा कि अवश्य ही कोई गंभीर बात होगी। चंद्रशेखर ने वहाँ उपस्थित किसी एक से इसका कारण पूछा।

वीरवर्धन की इकलौती पुत्री का विवाह एक महीने के पहले ही हुआ था। दामाद ससुराल में ही रहता था। उस दिन सबेरे जब वह उद्यानवन में टहल रहा था, तब विष सर्प ने उसे डस लिया और वह मर गया। इसी कारण हर एक के चेहरे पर विषाद छाया हुआ है।

वह शुभ मुहूर्त पर घर से निकला, लेकिन वही शुभ मुहूर्त राजा के दामाद के लिए अशुभ मुहूर्त प्रमाणित हुआ। अब चंद्रशेखर से वहाँ रहा नहीं गया। वह अपने गाँव की ओर लौट

पड़ा। उसे इस बात का बड़ा दुख हुआ कि उसका प्रथम प्रयत्न ही विफल हो गया।

चंद्रशेखर के पिता ने कहा "मेरा निर्णीत मुहूर्त तुम्हारे लिए कल्याणकारी प्रमाणित नहीं हुआ। अब इस बार समीरपुर के ज़मींदार वल्लभ के पास जाओ और उनके आश्रय में रहो। अपने मित्र सुनीतशर्मा से शुभ मुहूर्त निकलवाऊँगा।"

चंद्रशेखर समीरपुर गया। वहाँ जाने पर उसे मालूम हुआ कि ज़मींदार रोग-ग्रस्त हो गये हैं। वैद्य भी निर्णय लेने की स्थिति में नहीं हैं कि आख़िर रोग है क्या ? सब वैद्य असमंजसता में डूबे हुए हैं।

इस बार भी प्रयत्न की विफलता के कारण चंद्रशेखर बहुत ही निराश हो गया। उसमें उत्साह नहीं रह गया। उसे लगा कि पिताजी की बातें सारहीन हैं। वह घर की ओर निकल पड़ा। रास्ते में अपनी प्यास को बुझाने के लिए एक सरोवर का पानी पाया। सरोवर के तट पर जो बरगद का वृक्ष था, उसके नीचे अपनी थकावट दूर करने बैठ गया।

थोड़ी देर के बाद उधर ही से गुज़रते हुए एक मुसाफ़िर ने उस सरोवर का पानी पीकर अपनी प्यास बुझायी। वह भी बरगद के वृक्ष के पास आया, किन्तु चंद्रशेखर ने उसे नहीं देखा।

मुसाफ़िर ने चिंतित व दुखी चंद्रशेखर को देखकर कहा "महाशय, क्या मैं जान सकता हूँ, आप कौन हैं ?" उसके स्वर में मृदुता थी।

अपने विचारों में खोया चंद्रशेखर एकदम चौंक उठा और कहा "मैं कोई उतना बड़ा आदमी नहीं हूँ, जिसके बारे में आप जानें। मैं एक अभागा हूँ, भाग्यहीन हूँ।"

मुसाफ़िर को उसकी बातों पर आश्चर्य हुआ। उसने फिर एक और बार चंद्रशेखर को ध्यान से देखा और कहा "आप तो सरस्वती के मानस पुत्र हैं, आपका भाग्य किसी भी स्थिति में दुर्भाग्य नहीं हो सकता। जरा अपना दायाँ हाथ बढ़ाइये।" कहता हुआ वह बग़ल में बैठ गया और उसके दायें हाथ की रेखाओं को ध्यान से देखने लगा।

हस्त रेखाओं को ध्यान से देखते हुए उस मुसाफ़िर ने चंद्रशेखर से बीच-बीच में कुछ सवाल भी किये। आख़िर बड़े प्यार से उसने कहा "तीन महीनों तक आप कहीं मत निकलिये। अगले माघ शुद्ध पंचमी के दिन अपने गाँव की पूरबी दिशा की ओर यात्रा कीजिये और पहले-पहल जो ज़मींदार मिलेगा, उन्ही का आश्रय लीजिये। फिर आपका शुभ ही शुभ होगा।" यह कहकर वह चला गया। आश्चर्य में डूबा शेखर धीरे से वहाँ से उठा और मुसाफ़िर के कहे ज्योतिष के बारे में ही सोचते हुए जाने लगा।

पूरबी दिशा में शेखर के गाँव के समीप ही जो ज़मींदार था, वह था नरसिंहवर्मा। वह जिस कुग्राम में रह रहा है, वह भी उसी के अधीन है।

नरसिंहवर्मा वृद्ध था। उसकी पाँच पत्नियाँ थीं। उसकी वक्र बुद्धि के बारे में तरह-तरह की कथाएँ प्रचलित थीं। कवि उसे रसीली कविताएँ सुनाते थे, उनका आनंद भी वह लूटता था। पर क्षण भर में उसकी बुद्धि पलट जाती ती और वह भेंट में एक दमड़ी मात्र देकर कवि को भेज देता था। शेखर ने भी ये घटनाएँ सुन रखी थी। नरसिंहवर्मा टेढ़े स्वभाव का तो था ही, साथ ही उसका शास्त्र-ज्ञान भी सीमित था।

घर पहुँचकर उसने अपने पिता से ज्योतिषी की कही बातें बतायीं। उसके कहे अनुसार तीन महीने वह घर से नहीं निकला। बाद भगवान पर भार डालकर ज्योतिषी के कहे मुहूर्त पर वह नरसिंहवर्मा से मिलने गया।

शेखर के आने का कारण जानकर दिवान ने उससे कहा "आज ज़मींदार के पिता की पुण्यतिथि है। वे उन कामों में व्यस्त हैं। शाम तक किसी से नहीं मिलेंगे।"

इन बातों को सुनकर शेखर निराश तो अवश्य हुआ, पर साथ ही उसमें हठ ज़ोर पकड़ता गया।

उसने दिवान से कहा "महोदय, शाम तक यहीं इंतज़ार करूँगा। बस, आप इतनी कृपा मात्र कर दीजिये कि शाम को ज़मींदार

मेरी कविता सुनें।''

शेखर के मुख की दीनता देखी दिवान ने। साथ ही उसने देखा कि राख से ढ़के मणि की तरह प्रकाशवान है वह। मन ही मन उसने निर्णय किया कि इस कवि की सहायता करूँगा। यह कवि योग्य व सहायता का पात्र लगता है। उसने वचन दिया कि अवश्य ही आवश्यक प्रबंध करूँगा। अतिथि-गृह में उसके रहने का भी प्रबंध किया।

शाम हुई, किन्तु शेखर को ज़मींदार के दर्शन नहीं हुए। जब अंधेरा छा चुका था, तब कहीं दिवान आया और कहा ''महाशय, आपके बारे में जमींदार से कह चुका हूँ। आज उनके पिता की पुण्य-तिथि है। उनके पिता को भी कविता बहुत पसंद थी। इसलिए उन्होंने कहा ''आज अपने को कवि कहता हुआ जो मेरे आश्रय में आया है, उसे आश्रय दो, चाहे वह निकम्मा कवि ही क्यों ना हो। उन्होंने कहा कि आज से वह मेरे आस्थान कवियों में से एक होगा। उसे एक हज़ार एक सौ एक अशर्फ़ियाँ, रेशमी शाल दो और सम्मान पूर्वक घोड़े की गाड़ी में भेजो। उससे यह भी कहो कि हर रोज़ शाम को आये, अपनी कविताओं से हमारा मन बहलाये।'' इन सबका प्रबंध करने में थोड़ा विलंब हो गया। लीजिये यह धन, ये वस्त्र। घोड़ा-गाड़ी भी तैयार है।''

यह सब सुनकर शेखर की समझ में नहीं

आया कि रोऊँ या हँसूँ। वह अपना सामर्थ्य दिखाकर ज़मींदार की प्रशंसा पाने आया था। उसे विश्वास था कि मेरी कविताएँ सुनकर ज़मींदार अवश्य ही प्रसन्न होंगे और मुझे आश्रय देंगे। किन्तु ऐसा हो नहीं पाया। ज़मींदार ने अपने पिता की आत्मा को तृप्त करने के लिए उसे आस्थान में रख लिया। यह तो केवल संयोग की बात हुई। उसके स्वाभिमान को धक्का लगा, पर कर भी क्या सकता था। उसने भेटें स्वीकार कीं और दिवान से अनुमति लेकर निकल पड़ा। उसने ज़मींदार को अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए दिवान से विनती भी की।

इसके बाद एक साल तक चंद्रशेखर

जमींदार को आस्थान कवि बना रहा। वृद्ध जमींदार का आश्रय में बहुत से झूठे, नकली कवि केवल धन की आशा लेकर रह रहे थे। उनकी संगत में चंद्रशेखर ने मन की शांति भी खो दी। कविता से ही उसका दिल उचट गया।

इन परिस्थितियों में, घोड़ा गाड़ीवाले के ना आने की वजह से शेखर अपने गाँव से पद्मनाभपुर पैदल ही निकल पड़ा। बड़ी कड़ी धूप थी। उसे प्यास लगी। मार्ग मध्य में उसने एक सरोवर देखा और वहाँ रुक गया।

सरोवर के किनारे के वृक्ष के नीचे पगड़ी बाँधा एक मुसाफ़िर पहले ही से बैठा विश्राम ले रहा था। उससे थोड़ी दूरी पर एक अश्व घास चर रहा था।

शेखर प्यास बुझाकर जब लौट रहा था, तब उस मुसाफ़िर ने उसे देखकर मुस्कुराया। शेखर भी मुस्कुराते हुए उसके बग़ल में बैठ गया।

उस मुसाफ़िर ने शेखर से पूछा ''क्या मैं जान सकता हूँ, आप कौन हैं ?'' इस प्रश्न को सुनते ही शेखर को उस मुसाफ़िर की बात याद आ गयी। और उसे यह भी याद आया कि उसके प्रश्न के उत्तर में उसने कहा था कि एक भाग्यहीन हूँ।

अब उसने कहा ''मैं एक मानव हूँ। भाग्यदेवी मेरी माँ है, दुर्भाग्य मेरे पिता हैं।''

मुसाफ़िर ने यह जवाब सुनकर अचरज से पूछा ''यह आप क्या कह रहे हैं ?'' शेखर ने धीरे-धीरे कहा ''माफ़ कीजिये। अनावश्यक ही कुछ बक गया। अब आपके प्रश्न के उत्तर में एक कविता सुनाऊँगा। सुनिये'' कहते हुए उसने भावभरी एक आशु कविता सुनायी।

उसका सारांश यों है : खिली चाँदनी में उद्यानवन के पुष्प अपनी सुगंधि को बिखेर रहे हैं। उस सुगंधि से आकर्षित भँवरे पुष्पों के मकरंद को तृप्ति से पी रहे हैं। उस समय एक अपूर्व सुंदरी उन पुष्पों के बीचों बीच विषाद वदन लिये बैठी हुई है। पुष्पों ने उसकी स्थिति पर दयाद्र होकर उससे पूछा ''ऐसे उल्लास भरे वातावरण में, एक ही दिन में

मुरझा जानेवाले हम ही जब मज़ा लूट रहे हैं तो कुसुम जैसे तुम्हारे मुखकमल पर यह विषाद क्यों, यह उदासी कैसी ?''

उत्तर में उस युवती ने कहा "हाँ, मैं मुरझानेवाला पुष्प नहीं हूँ। किन्तु मुझको घेरे हुए जो भँवरे हैं, वे मुझे आनंद पहुँचानेवालों में से नहीं है। हवा में इधर-उधर डोलते समय पीड़ा पहुँचानेवाले काँटे हैं।''

कवि शेखर ने उस मुसाफ़िर से कहा "वह युवती मेरे हृदय की कविता-कन्या है। अपने दुर्भाग्य को अपने ही तक सीमित रखकर अपने परिवार को संभाल सकनेवाला भाग्यवान हूँ मैं। अब और अधिक विवरण मत पूछिये। अभी काफ़ी विलंब हो गया है। जाने की अनुमति दीजिये'' कहकर वह निकल पड़ा।

इसके एक हफ़्ते के अंदर ही दो घोड़ों से जुती एक गाड़ी शेखर के घर के सामने आकर रुकी। गाड़ी के साथ-साथ आये दो अश्वारुढ़ सिपाही उतरे और शेखर से मिले। उन्होंने विजयभूपति का आज्ञा-पत्र दिखाया, जिसमें राज-मर्यादाओं के साथ शेखर को ले आने को कहा गया था।

शेखर तक्षण ही समझ गया कि सरोवर के तट पर जिस व्यक्ति से वह मिला, वह कोई और नहीं, बल्कि स्वयं महाराज हैं।

राजप्रासाद पहुँचते ही राजा ने शेखर को प्यार से आलिंगन में लिया और कहा "युवकवि, आज से हर दिन अपनी कविता

के माधुर्य को चखवाने का भार आप ही पर है।''

महाराज के आदर पर शेखर की आँखें आँसुओं से भर गयीं। "इससे बढ़कर भाग्य मेरे लिए क्या होगा प्रभु। पर एक बात मेरी सुनिये। मैं नरसिंहवर्मा के आस्थान का कवि हूँ। उन्होंने मुझे जीवन प्रदान किया है। उनकी अनुमति लेने के बाद ही मैं आपके पास आ पाऊँगा।''

शेखर की बातों पर बहुत ही हर्षित होते हुए विजयभूपति ने कहा "मधुर-कविता चातुर्य के साथ-साथ, मृद जन्म-संस्कार भी हैं आपके पास। उसी दिन आपका सामर्थ्य मैं जान गया। अपनी इच्छा के अनुसार ही

कीजिये ।"

बेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा "समर्थ कवि चंद्रशेखर को सुखी और शांत जीवन प्रदान किया विजयभूपति ने । नरसिंह वर्मा के पास उसका जीवन काँटों के बीच के गुलाब की तरह व्यतीत हुआ । इसलिए जीवनदाता तो महाराज विजयभूपति हैं, प्रशंसा तो उनकी करनी चाहिये । उनका कृतज्ञ होना चाहिये ।

किन्तु शेखर का व्यवहार तो था बिल्कुल ही भिन्न । उसके इस अविवेक तथा मूर्खता की प्रशंसा महाराज ने भी यह कहकर की कि जन्म-संस्कार भी आपके उत्तम हैं । मुझे उनकी बातों से झूठी प्रशंसा की बू आती है । शुष्क लगती हैं । जानते हुए भी मेरे इन संदेहों को दूर नहीं करोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा ।"

तब विक्रमार्क ने कहा "मनुष्य का जीवन कविता से भी अधिक भुक्ति से जुड़ा हुआ हैं । इस कारण, शेखर के परिवार का अन्नदाता पहले पहल नरसिंहवर्मा ही था । हाँ, वह रसिक नहीं था, कविता-रस के आस्वादन में उसे पर्याप्त रुचि नहीं थी । पर उसकी इस क़सर पर उँगली उठाना ग़लती ही होगी । शेखर ने ऐसी ग़लती नहीं की । क्योंकि वह अच्छे संस्कारों का था । उसने अपने हृदय की पीड़ा अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त की, पर नरसिंहवर्मा का नाम कभी भी, कहीं भी नहीं लिया । इसीलिए महाराज ने यह कहकर उसकी प्रशंसा भी कि तुम्हारे जन्म-संस्कार उत्तम हैं । तुम्हारे सद्‌गुणों के प्रतीक हैं । महाराज ने शेखर का आदर किया । शेखर ने अपने आँसुओं से श्रद्धापूर्वक अपनी कृतज्ञता व्यक्त की । कोई भाव-भरी कविता भी कृतज्ञता को इतने सशक्त रूप में प्रकट नहीं कर पायेगी । इसलिए शेखर व विजयभूपति दोनों मेधावी हैं, उत्तम हैं । वे मूर्ख हैं ही नहीं, सहृदयी हैं ।"

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव के साथ ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा ।

आधार - सुचित्रा की रचना

शिवाजी के क़िले

रचना : मीरा उग्रा ◆ चित्र : अरित्रा

नैरुती दिशा में स्थित भारत के क़िलों तथा महाराष्ट्र के योद्धा वीर शिवाजी के जीवन का और उनके काल का अविच्छन्न संबंध है।

शिवनेरी नामक पुरातन सातवाहन क़िले में १६३० फ़रवरी, १९ को उनका जन्म हुआ।

शिवाजी ने पहले पहल तोर्ना नामक क़िले को अपने वश में किया। बिना किसी रक्तपात के उन्होंने १६४६ में इस क़िले को अपने अधीन किया। वर्षाकाल के कारण बिजापूर की रक्षा-सेना वहाँ नहीं थी। उस क़िले में पर्याप्त मात्रा में निधियाँ छिपायी गयी थीं, जिन्हें उन्होंने खोद निकालीं। वहाँ से नौ किलो मीटरों की दूरी पर राजगढ़ नामक एक क़िला बनवाया, जिसके लिए उन्होंने इस धन को ख़र्च किया। राजगढ़ किले में ही रहकर शिवाजी ने बीस साल अपना शासन चलाया। १६४७ में शिवाजी ने कोंडाना क़िले को अपने कब्जे में लिया, किन्तु पुरंदर समझौते के तहत उसे मुगलों के सुपुर्द किया।

तोर्ना क़िला

राजगढ़ क़िले के बुर्ज

कोंडाना क़िले को पुन: अपने अधीन लेने के लिए फ़रवरी, १६७० में तानाजी मालुसारे के नेतृत्व में छह सौ मवाली सैनिक भेजे गये। उनके साथ मालुसारे के भाई सूर्याजी भी गये। उस क़िले की दीवार बिल्कुल ही सीधी थी। कहा जाता है कि उस क़िले की पश्चिमी दीवार पर चढ़ने के लिए तानाजी ने 'यशवंति' नामक एक नवरे की सहायता ली। एक कोने में अंकुडीवाली एक क़ील 'यशवंति' की कमर में बाँध दी गयी और उस क़िले की दीवार पर फेंका गया। जैसे ही वह ऊपर पहुँच गया, कम वज़नवाला एक सैनिक उसे पकड़कर ऊपर चढ़ गया। ऊपर पहुँचने के बाद कील को अच्छी तरह से मेखने के बाद, तानाजी और तीन सौ सैनिक ऊपर चढ़ गये। आख़िर उन्होंने क़िले पर अपना कब्ज़ा पाया। इस युद्ध में शत्रुओं को भी मिलाकर क़रीबन हज़ार सैनिक मर गये। तानाजी की भी यहीं मृत्यु हुई। विजय का समाचार पाने के बाद शिवाजी ने कहा "गड आला, पण सिंग गेला, (क़िले पर कब्ज़ा तो हो गया, पर मेरा सिंह चला गया।) इसलिए इस क़िले का नाम पड़ा सिंहगढ़।

साम्राज्य के विस्तार के बाद शिवाजी को राजधानी की आवश्यकता पड़ी। इसकेलिए उन्होंने रैरी क़िले को चुना। समतल पहाड़ पर बारहवीं शताब्दी में निर्मित उस पुराने क़िले की लंबाई है २.४ कि.मी. चौड़ाई १.६ कि.मीटर। उस क़िले का नया नाम रखा गया राजगढ़। यहीं छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक १६७४जून, ६ को बड़े ही वैभव के साथ संपन्न हुआ। शिवाजी जानना चाहते थे कि इस
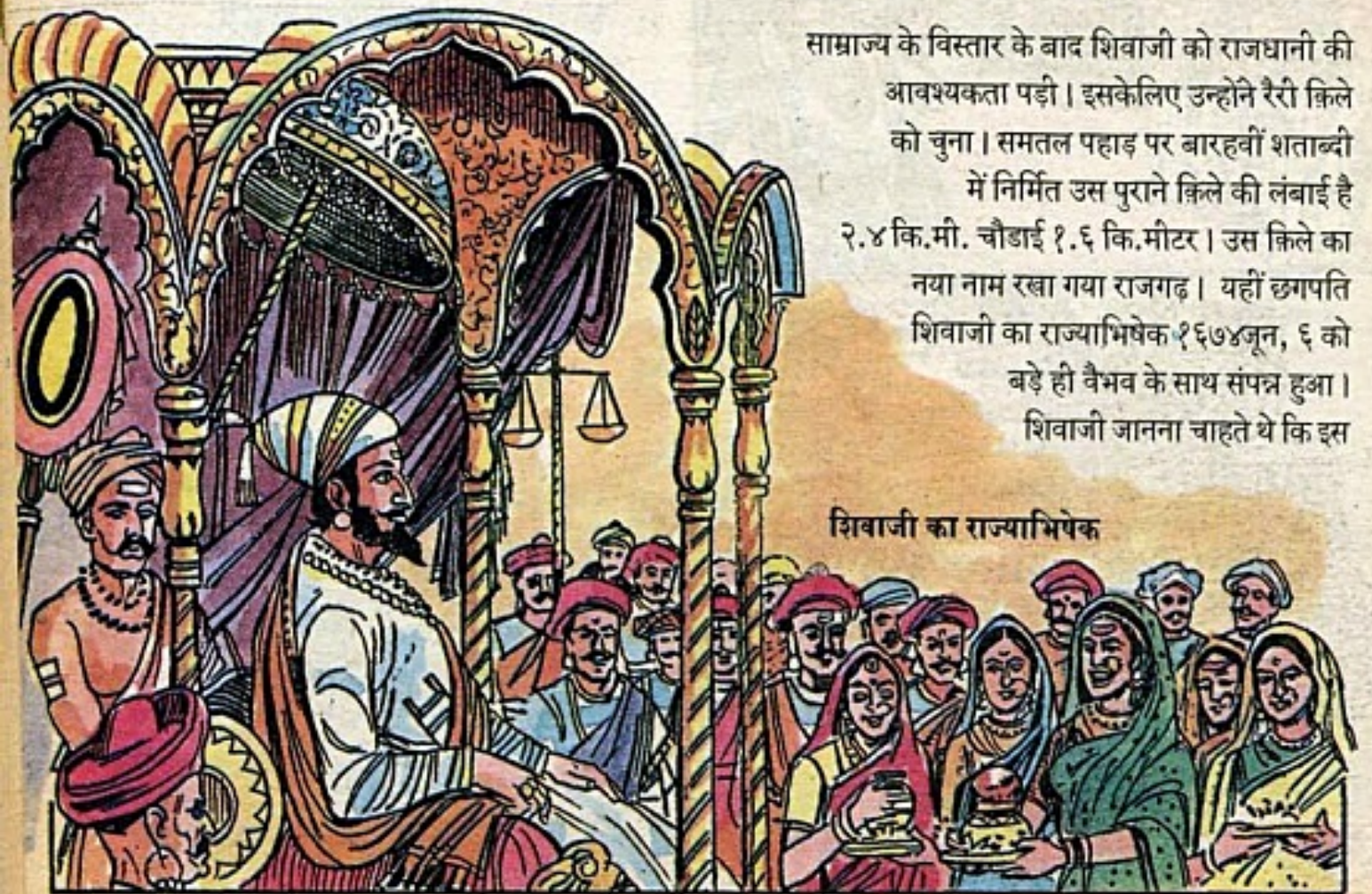
क़िले में वे कौन-से स्थल हैं, जहाँ से शत्रु प्रवेश पा सकता है। इसलिए उन्होंने घोषणा की कि जो व्यक्ति सबकी आँखों से छिपकर किसी भी तरफ़ से इस क़िले में प्रवेश करेगा, उसे मूल्यवान पुरस्कार दिया जायेगा। इस चुनौती कोमहाड नामक एक ग्रामवासी युवक ने स्वीकार किया और क़िले के अंदर आने के अपने जटिल प्रयत्न में सफल हुआ। जिस मार्ग से वह युवक आया, उस मार्ग को बड़ी मुस्तैदी से बंद कर दिया गया। वहाँ एक दरवाज़ा खड़ाकर दिया गया। अब भी उस दरवाज़े को 'चोर दरवाज़ा' कहते हैं। एक बार, समय बीत जाने की वजह से सैनिकों ने क़िले के दरवाज़े को बंद कर दिया। वहाँ दूध बेचने के लिए आयी हुई हीराकनी को क़िले में ही रह जाना पड़ा। घर में उसका छोटा बच्चा था। वह उसके पास जाने के लिए आतुर थी। वह एक तरफ़ की दीवार पर चढ़ गयी और दूसरी तरफ़ आ गयी। अंधेरे में सीधे पहाड़ से उतरी और घर पहुँच गयी। जिस जगह पर वह उतरी, शिवाजी ने उस जगह पर एक बुर्ज का निर्माण करवाया और उसका नाम रखा 'हीराबुर्ज'।

हीराकनी का साहस

राजगढ़ के क़िले में ही शिवाजी की समाधि है। उस समाधि के सामने ही उनका कुत्ता 'वंध्या' की भी समाधि है। कहते हैं कि वह शिवाजी की चिता में कूद पड़ा।

राजगढ़ क़िला

शिवाजी की समाधि
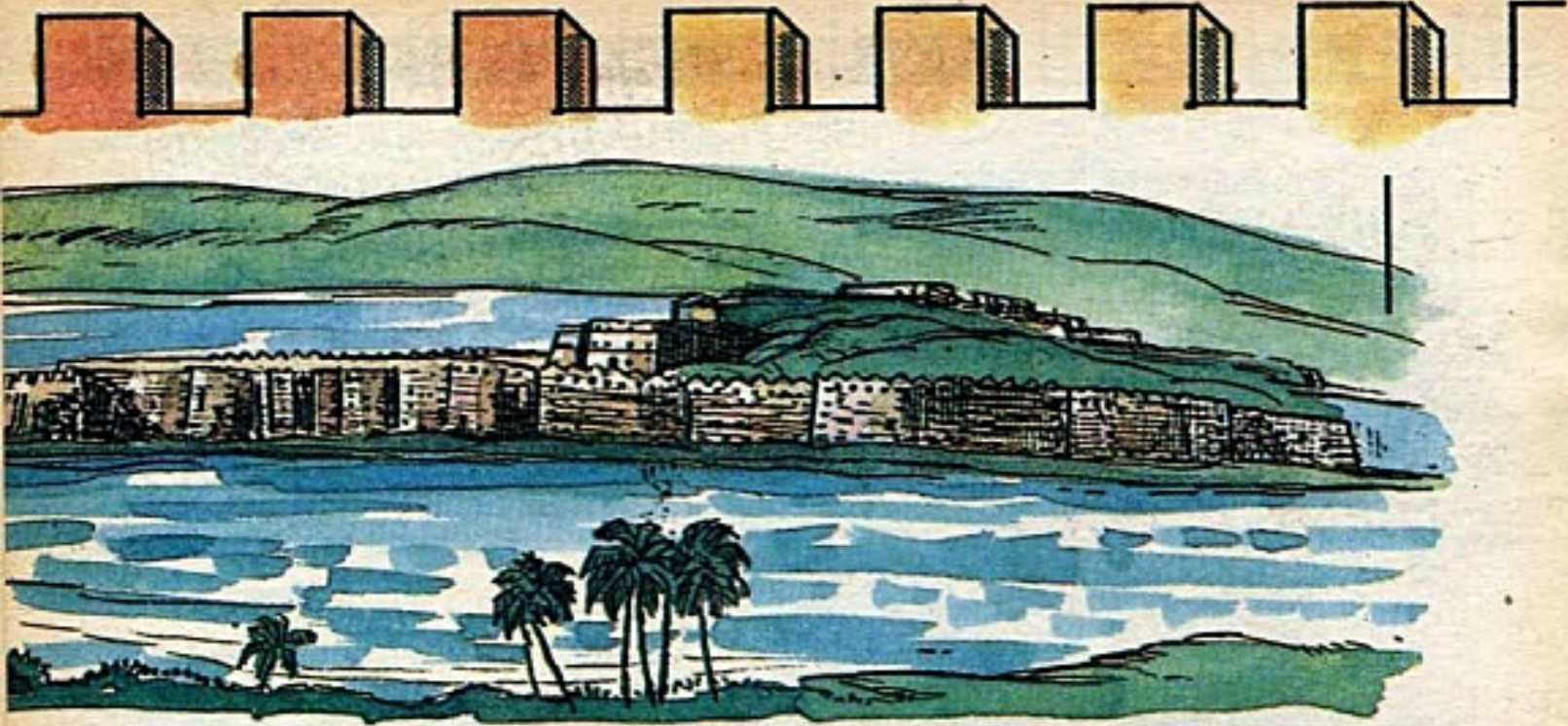
जंजीरा क़िला

शिवाजी ने जंजीरा क़िले को अपने अधीन करने के लिए बहुत से विफल प्रयत्न किये। एक द्वीप के बीच बने उस क़िले का निर्माण किया, १५११ में मालिक अंबर ने। पुर्तगाली तथा ब्रिटिशवाले भी उस क़िले को हस्तगत कर नहीं पाये। शिवाजी ने कुछ जलदुर्गों का निर्माण किया। उन्हें इस क़िले से ही उन्हें बनाने की प्रेरणा प्राप्त हुई। माल्वा के तट पर सिंध दुर्ग को बनाने में तीन साल लगे। करोड़ 'हान्स' ख़र्च हुए। निर्माण-कार्य में सौ पुर्तगाली मज़दूरों की सहायता ली गयी। उन्होंने पद्मगढ़ का भी निर्माण किया, जो नौका-निर्माण में उपयोगी सिद्ध हुआ।

जंजीरा क़िले की नैरुती दिशा में ५६ कि.मी. की दूरी पर एक पुराना जलदुर्ग था। शिवाजी ने उसे अपने अधीन किया और उसका पुनःनिर्माण किया। उसका नाम रखा गया सुवर्ण दुर्ग। यहीं से वे 'सिद्दियों' के कार्यकलापों पर निगरानी रखते रहे।

शिवाजी की मृत्यु १६८० में हुई। उस समय तक २४० क़िले उनके अधीन थे।

सुवर्णदुर्ग क़िला

इंदुमति का विवाह

धर्मपाल भद्रावती राज्य का युवराज था। गुरुकुल में अपना विद्याभ्यास समाप्त करके राजधानी लौटा। उसे चाहिये था कि अपने पिता के पास रहे, राजनीति तथा शासन-पद्धतियों को अच्छी तरह से जाने, उनमें प्रवीण हो, किन्तु उसकी अभिरुचि थी, आखेट में, पहाडों की तराइयों में विचरने व नदी-तटों पर विश्राम करने में। वह स्वभाव से ही ज़ल्दबाज़ था।

राजा विजयेंद्र अपने पुत्र की इन नीयतों पर दुखी था। उसकी समझ में नहीं आता था कि बेटे को राजनीति तथा शासन-प्रणाली कैसे सिखायी जाए। कोई भी राजा इन्हें संपूर्ण रूप से जाने बिना समर्थ राजा नहीं बन सकता। राजा को यह अवश्य जानना चाहिये कि शत्रुओं की चालें क्या है ? उनके आक्रमणों का सामना कैसे करना चाहिये ? अपने राज्य का कैसे विस्तार करना चाहिये ? उसे यह भी जानना ज़रूरी है कि प्रजा की आवश्यकताएँ कैसे पूरी की जाएँ ? कर कैसे वसूल किये जाएँ आदि। इन परिस्थितियों में हठात् वह मर गया। इस कारण से धर्मपाल को राजा बनना पड़ा। तब उसकी उम्र इक्कीस थी।

राजा होने के बाद भी धर्मपाल के स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया। पूर्ववत् वह अकेले ही शिकार खेलने जाया करता था। फिर भी राज्य-पालन सुचारू रूप से होता था, क्योंकि उस राज्य का मंत्री सुबुद्धि अनुभवी, विश्वसनीय और समर्थ था। सेनाधिपति वीरवर्मा देशभक्त था। ये दोनों शासन को सुव्यवस्थित रूप से चलाते थे।

एक दिन धर्मपाल सूर्योदय होते ही अकेले ही शिकार करने निकल पड़ा। जंगल में बहुत देर तक शिकार करता रहा और दुपहर तक वह बिल्कुल ही थक गया। प्यास बुझाने के

शंकर

लिए पानी की खोज में लग गया। आख़िर उसने घने पेड़ों के बीच में एक सरोवर को देखा।

धर्मपाल घोड़े से उतरा। सरोवर का पानी पीकर अपनी प्यास बुझायी। घोड़े ने भी पानी पिया। जब वह घोड़े की लगाम पकड़कर जाने लगा तब सरोवर के उस पार के दृश्य को देखकर चकित रह गया और क्षण भर रुक गया।

सरोवर के उस पार एक कुटीर था। उसके सामने तरह-तरह के फलों के वृक्ष और रंग-बिरंगे फूलों के पौधे थे। यह जानने के लिए कि वह कुटीर क्या है और किसका है, उस ओर वह बढ़ा। जब वह कुटीर के पास-गया, तब उसने देखा कि एक असाधारण सुँदरी एक तोते को अमरूद खिला रही थी। एक पिंजडे में बंद तोते ने कहा "अतिथि का स्वागत।"

तोते की बातों से चौंकी उस सुँदरी ने पीछे मुड़कर धर्मपाल को देखा। वह आश्चर्य में डूबी वहीं खड़ी रह गयी।

ऐसी अपूर्व सौंदर्य - राशि को देखकर धर्मपाल भी खड़ा ही रह गया।

कन्या ने अपने को संभालते हुए कहा "दुपहर की धूप में आपका आगमन हुआ है। ठंडा पानी लाती हूँ" कहकर वह कुटीर के अंदर जाने लगी।

धर्मपाल ने उसे रोकते हुए कहा "अभी-अभी सरोवर का पानी पिया है। आप यह कष्ट मत उठाइये। क्या मैं जान सकता हूँ, आप कौन हैं? कहीं आप इस जंगल में अकेली रह तो नहीं रही हैं? मैंने कितनी ही राजकुमारियों को देखा है, लेकिन सुँदरता में वे सब आपके सामने कुछ भी नहीं।"

अपनी प्रशंसा पर वह थोड़ी शरमायी और मुस्कुराती हुई बोली "मैं यहाँ अकेली नहीं हूँ। बचपन में ही मेरी माँ गुज़र गयी। पाँच सालों के पहले विषसर्प के डसने से मेरे पिताश्री का देहांत हुआ। उन्होंने मुझे अपने मित्र को सौंपा था। मेरा संरक्षक सक्षम शिकारी है। इस कुटीर में हम दोनों रहते हैं।इस प्रांत के निवासी वन-जाति के लोगों

की जड़ी-बूटियों से इलाज करती हूँ। मेरा नाम इंदुमति है। "मेरा नाम धर्मपाल है। इस देश का राजा हूँ।" धर्मपाल ने कहा। उसके कंठ-स्वर मे दर्प झलक रहा था।

इंदुमति को उसकी बातों से ना ही कोई आश्चर्य हुआ, ना ही भय। उसने कहा "आपको देखते ही मुझे भी लगा कि आप कोई राजा होंगे। नाम तो आपका सुन रखा है, पर देख रही हूँ, पहली बार।"

धर्मपाल कुछ कहना ही चाहता था, कुटीर की तरफ़ बढ़ती हुई इंदुमति ने कहा "क्षमा कीजिये। यहाँ की बस्ती का प्रधान रोग-ग्रस्त है। मैं उसका इलाज कर रही हूँ। तुरंत उसे कुछ जड़ी-बूटियाँ देनी हैं। चलती हूँ।"

धर्मपाल ने उसे रोकते हुए कहा "इंदुमति, तुम अपूर्व सुँदरी हो। तुम्हारी जैसी अपूर्व सुँदरी का इस जंगल में रहना शोभा नहीं देता। जंगल के खूँख्वार जानवरों और वन-जाति के लोगों की सेवा में तुम्हारा जीवन काटना बड़ी ही शर्मनाक बात है। मेरे साथ आ जाओ। राजधानी ले जाकर मैं तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा।"

इंदुमति ने धर्मपाल को एक बार हेय भरी दृष्टि से देखा और कहा "सेवा-भाव पवित्र है। जिसको दूसरों की सेवा करने का सौभाग्य मिलता है, उसे पुण्य मिलता है। अपने लिये ही जीने में क्या आनंद है? वह तो स्वार्थ है, अकर्मण्यता है। ऐसी ज़िन्दगी से मौत ही अच्छी है। क्या वन-जाति के लोग मनुष्य

नहीं होते ? उनमें भी सभ्य कहे जानेवाले लोगों की तरह हृदय, सद्भावनाएँ, सेवा-प्रवृत्ति नहीं होते? मैं तो कहूँगी कि सभ्य व नागरिक कहे जानेवाले लोगों से ये कहीं बहुत अच्छे हैं। इनमें दर्प, अहंकार, धनी या शिक्षित होने के झूठे दंभ नहीं होते। ये सीधे-सादे, सच्चे व मिलनसार होते हैं। स्वार्थ से ये दूर रहते हैं। नगरवासियों की तरह दूसरों की संपत्ति को लूटने के क्षुद्र विचार इनमें नहीं होते। ये किसी को धोखा नहीं देते, इनमें कपट नहीं होता। ऐसे लोगों की सेवा करते हुए मुझे अपार आनंद आता है'' कहकर कुटीर की तरफ़ बढ़ने लगी, तब उसने उसे रोक लिया और कहा ''एक राजा का तिरस्कार, जब कि वह स्वयं तुम्हे अपने यहाँ बुला रहा है।'' कहते हुए उसने उसका हाथ पकड़ लिया और ज़बरदस्ती घोड़े की तरफ़ ले जाने लगा।

इंदुमति अपने हाथ को धर्मपाल की पकड़ से छुडाने का प्रयत्न करती हुई बोली ''छी, मुझे छूना मत।'' कहती हुई वह चिल्ला पड़ी।

फिर भी धर्मपाल उसे अपने घोड़े पर बिठाने की कोशिश में लगा रहा, तब एक बाण तेजी से आकर उसकी भुजा में लगा।

दूसरे ही क्षण धर्मपाल ने पीड़ा से कराहते हुए इंदु को छोड़ दिया। इंदुमति ने उस ओर देखा, जहाँ से बाण आया था। उसने देखा कि दूरी पर उसका रक्षक एक पेड़ के नीचे खड़ा था। उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। आँखें आग बरसा रही थीं।

इंदुमति ने तक्षण ही धर्मपाल को सहारा दिया और उसे कुटीर के अंदर ले गयी। उसे पलंग पर बिठाया और भुजा में चुभे बाण को निकाला। घाव पर उसने पत्तों के रस का लेपन ड़ाला। कपड़े से उसे अच्छी तरह बाँध दिया।

इतने में इंदुमति का संरक्षक भी आया। आते ही उसने पूछा ''कौन है यह अधम राजा। कितना अहंकारी है यह।''

धर्मपाल ने उससे कहा ''माफ़ करना, ग़लती हो गयी। उस समय मेरी आँखों पर चर्बी छा गयी थी।''

उसके उत्तर से संरक्षक थोड़ा शांत हुआ। इंदुमति ने संकेत द्वारा संरक्षक को बताया कि वह बाहर जाए। थोड़ी देर बाद धर्मपाल भी कुटीर से बाहर आया और घोड़े पर आसीन होकर अपने नगर की ओर चला गया।

इस घटना के ठीक एक सप्ताह के बाद मंत्री सुबुद्धि बहुत-सी मूल्यवान भेंटें लाकर इंदुमति के कुटीर में आया। उसने कहा - "बेटी, ये भेंटें हमारे राजा ने भेजी हैं। वे बचपन से ही चंचल व उतावले स्वभाव के हैं। सप्ताह पहले यहाँ जो घटना घटी, उससे उनमें आमूल परिवर्तन हुआ। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि भविष्य में कभी भी विवाह की बात ही नहीं करूँगा।"

मंत्री की बातें सुनते ही इंदुमति का हृदय दया से पिघल उठा। आँसुओं पर नियंत्रण रखती हुई संरक्षक से बोली "चाचाजी, श्रावण माह का प्रवेश होते ही राजा को यहाँ आने को कहिये और उनसे कहिये कि मुझसे विवाह करके यहाँ से ले जाएँ।"

एक महीने के अंदर धर्मपाल का विवाह इंदुमति से बड़े वैभव से संपन्न हुआ।

विवाह के दूसरे दिन धर्मपाल और इंदुमति शाम को राजप्रासाद के ऊपरी भाग पर टहल रहे थे और ठंडी बयार का मजा ले रहे थे। तब इंदुमति ने कहा "देखा, मैंने कैसे आपकी प्रतिज्ञा का भंग किया ?"

धर्मपाल तुरंत बात को समझ नहीं पाया, पर एक क्षण तक इंदुमति को देखते हुए हँसकर बोला "हाँ, अवश्य ही तुमने मेरी प्रतिज्ञा का भंग किया है। पर कहो तो सही, आख़िर तुमने भी क्या किया ? पहले तो तुमने मेरा तिरस्कार किया, मुझे दुतकार दिया और स्वयं विवाह का संदेश भेजा। ऐसा क्यों ?"

"क्षमा कीजिये महाराज, मैंने पहले तिरस्कार किया आपका उतावलापन। सीमाओं को लांघता हुआ आपका अहंकार। और आपकी प्रतिज्ञा जानकर मैं जान गयी कि आप मुझसे हृदयपूर्वक प्रेम कर रहे हैं और आपमें संपूर्ण परिवर्तन आ गया है। इसीलिए मैंने विवाह का संदेश स्वयं भेजा था।" इंदुमति ने मंद मुस्कान भरते हुए कहा।

संदेह-निवारण

सौशील्य देश का राजा सर्वोत्तम शासन-पालन में ही दक्ष नहीं था, बल्कि उत्तम कलापोषक भी था। अपने राज्य के हर कलाकार का वह आदर करता था। विभिन्न कलाओं में निष्णात कलाकारों को उसने अपने आस्थान में आश्रय दिया और कलाओं के प्रति अपनी अभिरुचि को प्रमाणित किया।

एक बार सर्वोत्तम अपनी पटरानी निर्मलादेवी के साथ उद्यानवन में टहल रहा था। उस समय आस्थान का कवि प्रमुख संजय वहाँ आया। कुछ ही दिनों में सर्वोत्तम 'सर्वकला सम्मेलन' के नाम से एक बड़ा उत्सव मनानेवाला था। उसने निर्णय भी किया था कि इस सम्मेलन में प्रतिभाशाली कलाकारों का भारी स्वागत-सम्मान हो। इस संबंध में राजा से चर्चा करने के लिए संजय का वहाँ आना हुआ।

उनके संभाषणों को ध्यान से सुनने के बाद निर्मलादेवी ने राजा से कहा "मुझे लगता है कि आप इस सम्मेलन को चलाकर जनता के धन का दुरुपयोग कर रहे हैं। यह तो जानी हुई बात है कि राजा करों के रूप में जनता से धन वसूल करता है। यह धन जनता की मेहनत की कमाई है। कोई व्यापार करके कमाता है तो कोई खेती करके। जीविका कमाने के अनेकों मार्ग हैं। इन मार्गों पर चलकर जनता परिवार के प्रति अपने जो कर्तव्य हैं, पूरी कर पाती है। और आप हैं, जो उनके धन का दुरुपयोग कर रहे हैं। मनुष्य के लिए अति आवश्यक वस्तुएँ है आहार, वस्त्र और गृह। जनता को ये अधिकाधिक प्राप्त हों, इस दिशा में आप और कर जायेंगे तो अच्छा होगा।"

यह सुनकर संजय का मुखड़ा विवर्ण हो गया। सर्वोत्तम को लगा मानों उसका सर ही काट दिया गया हो। बिना कुछ कहे संजय राजा की अनुमति लेकर वहाँ से चला गया।

सर्वोत्तम रानी की तरफ़ देखते हुए बोला

खुशबू .आर

"देवी, भगवान की कृपा से हमारे देश की प्रजा को किसी की भी कमी नहीं है।" यों शुरु करके वह रानी को ललित कलाओं की विशिष्टताओं, मनुष्य को उनकी आवश्यकताओं आदि के बारे में बताने लगा। इस बात को लेकर दोनों के बीच वाद-विवाद हुआ। आख़िर महारानी ने अपने वाद में बताया, मनुष्य को चाहिये वस्त्र, गृह, आहार।

"हाँ, तुमने ठीक कहा। आदमी को जीने के लिए आहार चाहिये। किन्तु आहार मात्र से मानव संतृप्त नहीं रह सकता।" राजा ने कहा।

उस समय विदूषक वहाँ आया। उसने उन दोनों की बातें सुनीं। जब वे दोनों किसी निर्णय पर नहीं आ पाये तो उन दोनों ने विदूषक धरहास को विषय समझाया और सत्य-असत्य और को निर्धारित करने की जिम्मेदारी सौंपी।

धरहास थोड़ी देर सोचता रहा। उसने पास ही काम पर लगे प्रहरी को बुलाया। उसे पूरी बातें बतायीं और उसका अभिप्राय पूछा। वह हँसता हुआ बोला "मनुष्य के लिए मुख्य तो खाना ही है। उसके बाद ही दूसरों की बारी है।"

"ऐसा मत कहो। खाने मात्र से ही आदमी ज़िन्दा रह सकेगा?" धरहास ने पूछा।

प्रहरी ने कहा "क्यों नहीं जी सकता? जी सकता है?" तब धरहास ने निर्मलादेवी की तरफ़ देखकर कहा "महारानी, मुझे पंद्रह दिनों की मोहलत दीजिये। इसी प्रहरी से आपके संदेह का निवारण करवाऊँगा।"

रानी ने हँसते हुए 'हाँ' कहा।

धरहास ने प्रहरी को क़ैद किया और उसे

एक कमरे में बंद कर दिया। समय पर उसके खाने का इंतज़ाम किया। हफ़्ता हो गया। धरहास ने उसे बाहर बुलाया और राजा के पास ले गया। वहाँ उससे पूछा "ये सातों दिन कैसे कटे ?"

"महोदय, मैं वहाँ बहुत मुश्किल से रहा। इस आशा पर ही मैं वहाँ रह पाया कि आप किसी ना किसी दिन छुडवायेंगे। अगर यह आशा नहीं होती तो आत्महत्या कर लेता।" प्रहरी ने कहा।

धरहास ने महारानी से कहा "सुना महारानी। हाँ, मैं मानता हूँ कि मनुष्य को जीने के लिए आहार अवश्य चाहिये। किन्तु आहार मात्र से वह सुख से जी नहीं सकता। आहार केवल उसके प्राणों की रक्षा कर सकता है। सुखमय तथा तृप्तिमय जीवन बिताना हो तो चाहिये-आनंद, आह्लाद, विचार, आवेश। ऐसे बहुत-से चाहिये। प्रकृति में सुंदर पुष्प को देखकर आप बहुत आनंदित होती हैं। उससे आपकी आँख को आनंद मिलता है। लयबद्ध मधुर ध्वनि सुनने पर आपके कान को आनंद पहुँचता है। इस प्रकार आपके समस्त इंद्रियों को तृप्त करनेवाले अंश इस सृष्टि में अनगिनत हैं। इनके बिना जीना कितना मुश्किल है, आप खुद सोचिये। बड़ों ने कहा है कि जीवित रहने के लिए आहार चाहिये ना कि सिर्फ जीने के लिए आहार। बड़ों की इस बात को आपको याद दिला रहा हूँ। प्रहरी को ही उदाहरण के रूप में लीजिये। इसने तो कहा था कि आहार के बिना मनुष्य को कुछ नहीं चाहिये। मैंने इसे जेल में रखा और समय पर खाने का प्रबंध भी किया। किन्तु समय पर खाना खाता हुआ जेल में रह नहीं सका। वह जेल से बाहर आने छटपटा रहा था। मेरा विश्वास है कि आप सत्य-असत्य को जान गयी होंगीं।"

सर्वोत्तम ने तालियाँ बजायीं और रानी की तरफ़ तिरछी नज़र से देखा। रानी ने सिर झुका लिया, मानों वह मान गयी कि ग़लती मेरी ही है।

सर्वोत्तम ने रानी से कहा "अच्छा हुआ, तुम्हारे संदेह का निवारण हो गया। पर इसके लिए इस बेचारे प्रहरी को एक हफ़्ता भर जेल में रहना पड़ा।" रानी ने तुरंत अपने गले की मोतियों का हार निकालकर प्रहरी को दिया।

द्रौपदी के स्वयंवर पर कितने ही राजा कांपिल्य नगर आये। विभिन्न स्थलों पर उनके रहने का प्रबंध हुआ। पाँडव एक कुम्हार के घर में रहने लगे। भिक्षा माँगकर अपना पेट भरने लगे।

द्रुपद ने भी अपनी इच्छा प्रकट होने नहीं दी कि वह अपनी पुत्री का विवाह अर्जुन से करना चाहता है। उसने एक असाध्य धनुष का आयोजन किया, जिसपर बाण चढ़ाकर चक्राकार में शून्य में घूमते हुए मत्स्य यंत्र को निशाना बनाये। उसने घोषणा भी की थी कि जो कुशल धनुर्धारी यह काम कर पायेगा, उसी से उसकी पुत्री का विवाह संपन्न होगा।

इसमें भाग लेने के लिए कर्ण व कौरव-पुत्र भी आये। अलावा इनके और बहुत से राजा, ब्राह्मण, ऋषि आदि भी आये, जो इस उत्सव को देखने आतुर थे। द्रुपद ने उनका स्वागत-सत्कार किया।

नगर की पूर्वी दिशा में स्वयंवर का मंडप बनाया गया। उसे अच्छी तरह से सजाया गया। क्षत्रिय और ब्राह्मण अपने अनुकूल स्थलों पर आकर बैठ गये। द्रुपद का वैभव देखकर उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। उनके मनोरंजन के लिए नृत्य आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। ये कार्यक्रम बहुत दिनों तक होते रहे।

आख़िरी दिन द्रौपदी ने मंगल स्नान किया और अनेकों सुवर्ण आभूषणों से अपने को अलंकृत किया। अपने हाथ में सुवर्ण पुष्पों की माला लिये स्वयंवर-मंडप के मध्य आयी। द्रुपद के पुरोहित सोमक ने पहले ही वहाँ अग्नि-कुंड का प्रबंध किया था। उसने द्रौपदी का स्वागत किया।

द्रौपदी-स्वयंवर

द्रौपदी के आते ही मंगल वाद्य बजे।

तब धृष्टद्युम्न आसीन लोगों के सामने आया। उसने उन्हें पाँच बाणों तथा आयोजित मत्स्य-यंत्र दिखाया।

उसने उनसे कहा "जो इन पाँचों बाणों को धनुष पर चढ़ाकर मत्स्य-यंत्र को नीचे गिरायेगा, उससे मेरी बहन शादी करेगी। इसलिए आपमें से जो धनुर्विद्या में पारंगत हैं, आगे बढ़ सकते हैं और वीरोचित प्रयत्न कर सकते हैं।" उपरांत उसने द्रौपदी को वहाँ उपस्थित राजाओं से परिचय कराया। वहाँ उपस्थित व्यक्तियों में दुर्योधन, शल्य, विराट, शकुनि, अश्वथ्थामा, अक्रूर, सांबा, प्रद्युम्न, कृष्ण, कृतवर्मा, अनिरुद्ध, सुशर्मा, शिशुपाल, चित्रांगद, भगदत्त, पौंड्रक वासुदेव आदि कितने ही प्रमुख थे।

कामदेव के छठवें बाण की तरह अनोखी व अद्भुत दीखनेवाली द्रौपदी को, वे सब बिना पलक मारे देखते ही रहे। कृष्ण ने ब्राह्मणों के बीच बैठे पॉडवों को पहचान लिया और उसने यह बात बलराम को बतायी।

मत्स्य-यंत्र को गिराने का कार्यक्रम आरंभ हुआ। एक-एक करके राजकुमार आते रहे। बाण को धनुष में बिठाना भी उनसे हो नहीं पाया। वे अपमानित होकर लौट पड़े। बहुत-से लोगों के पराजित होने के बाद कर्ण आगे बढ़ा। बाण को धनुष में स्थिर करने के प्रयत्न में संलग्न हो गया। सबने समझा, वही अवश्य ही द्रौपदी को पायेगा। भाट कर्ण की प्रशंसा में गीत गाने लगे। यह सुनकर द्रौपदी ज़ोर से चिल्ला पड़ी "मैं एक सूत के पुत्र की वधु नहीं बनूँगी।" कर्ण क्रोधित हुआ। सूर्य को देखते हुए वह अपनी जगह पर आ बैठा। कर्ण के बाद शिशुपाल, जरासंघ, शल्य आदि भी असफल रहे।

और कोई राजा आगे नहीं बढ़ा। दर्शकों में कानाफूसी होने लगी। धृष्टद्युम्न ने बड़े ही व्यग्य भरे स्वर में कहा "यहाँ इतने योद्धा राजकुमार पधारे हैं। परंतु आप में से कोई भी इस मत्स्य-यंत्र को अपना निशाना नहीं बना सके। यह तो बड़ी ही हास्यास्पद बात है। इससे बढ़कर लज्जा व अपमान की बात और क्या हो सकती है।" उस समय ब्राह्मणों के बीच बैठा अर्जुन आगे आया। उसने धनुष अपने हाथ में लिया। यह

क्षण के लिए सब चुप हो गये। फिर हर्षध्वनियाँ आकाश को छू गयीं। ब्राह्मणों ने आनंद से अपने हाथ उठाये। द्रुपद आनंद और आश्चर्यभरित होकर अर्जुन को ही एकटक देखता रहा।

स्वयंवर पर जितने भी राजा आये, उन्होंने इसे अपमान माना। वे कहने लगे "इस द्रुपद ने हमें पेड़ पर चढ़ा दिया। हम फल तोड़ने ही वाले थे कि इसने हमें नीचे गिरा दिया। अपनी पुत्री का विवाह एक क्षत्रिय से ना करके एक ब्राह्मण से करे? ब्राह्मणों में क्या कहीं स्वयंवर का रिवाज़ है? कैसे इस ब्राह्मण से यह शादी करेगी? इसने हमारा अपमान किया है और इसका मज़ा हमें इसे चखाना ही पड़ेगा। अगर द्रौपदी किसी क्षत्रिय राजकुमार से विवाह करे तो ठीक है, अथवा इसे अग्नि में फेंक देंगे। चूँकि यह ब्राह्मण युवक है, इसलिए इसकी जान से नहीं खेलेंगे।" कहते हुए राजाओं ने तलवारे निकालीं और द्रुपद को घेर लिया। द्रुपद डर गया और ब्राह्मणों के बीच जा छिपा। भीम और अर्जुन ने उन आक्रमणकारियों को रोका। वे जब उनपर बाणों की बौछार करने लगे तब भीम ने एक वृक्ष को उखाडा और उनके बाणों को रोकता रहा। अर्जुन बगल में ही खड़ा रहा। ब्राह्मण द्रुपद को बचाने के लिए राजाओं पर पथ्थर फेंकने लगे। अर्जुन ने उन्हें ऐसा करने से रोका और जिस धनुष से उसने मत्स्य-यंत्र को गिराया था, उसी धनुष को लेकर बाण फेंकने लगा। शल्य और कर्ण ने निश्चय किया कि युवक ब्राह्मण है, पर

देखकर ब्राह्मण आश्चर्य में डूब गये और कहने लगे "महापराक्रमी शल्य, जरासंध, शिशुपाल जैसे राजाओं से ही जो संभव हो नहीं पाया, वह यह ब्राह्मण क्या कर पायेगा? यह निश्चय ही ब्राह्मणों का अपमान करके ही छोड़ेगा।" कुछ तो कहने लगे "यह बलशाली होगा, धनुर्विद्या में निष्णात होगा, नहीं तो यह काम करने पर क्यों तुल जाता?"

अर्जुन धनुष के पास आया। सभी को सादर प्रणाम किया। अपने ही आप अपने गुरुओं का स्मरण किया। हर दिन जिस सुगमता से अपने धनुष में बाणों को चढ़ाकर बेधता था, उसी तरह उसने पाँचों बाणों को बरसाया और मत्स्य-यंत्र को निशाना बनाकर नीचे गिरा दिया। एक

इसे मारने से कोई पाप नहीं। अर्जुन और कर्ण दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े होकर लड़ने लगे। अर्जुन के प्रताप पर कर्ण चकित होता आ बोला "ऐ ब्राह्मण, तेरे अस्त्र-कौशल पर बहुत ही हर्षित हूँ। मेरे साथ लड़ने की शक्ति केवल अर्जुन ही रखता है। सच बताओ कि तुम हो कौन।" किन्तु अर्जुन चुप ही रहा। उसने बताना नहीं चाहा कि वह कौन है। कर्ण को भी मालूम हो गया कि इस ब्रह्मतेजस्वी पर विजय पाना असंभव है। इसलिए उसने लड़ना छोड दिया।

इस बीच शल्य और भीम के बीच लड़ाई हो रही थी। आख़िर भीम ने शल्य को उठा लिया और दूर फेंका। वह उसे मारना नहीं चाहता था, इसीलिए ऐसा किया। सब ब्राह्मण शल्य की स्थिति पर ज़ोर से हँस पड़े। शेष राजकुमारों में आगे बढ़कर उनसे लड़ने का साहस नहीं था।

अब सभी जान गये कि ये कोई साधारण ब्राह्मण नहीं हैं। यह जानने की उत्सुकता भी तीव्र होती गयी कि ये हैं कौन ? कृष्ण ने भी राजाओं से कहा "इन ब्राह्मणों ने तो न्यायपूर्वक ही द्रौपदी को जीता है। राजाओं से धर्मयुद्ध भी किया है। इसलिए अच्छा यही होगा कि उनसे दूर ही रहें।" कृष्ण की सलाह के अनुसार ही किसी भी राजा ने उनके पास भी जाने का दुत्साहस नहीं किया।

कुम्हार के घर में कुन्ती अकेली ही रही। बहुत देर तक वह अपने पुत्रों की राह देखती रही। जब वे नहीं आये, तब वह ड़र गयी। वह सोचने लगी, कहीं दुर्योधन ने उन्हीं किसी प्रकार की हानि तो नहीं पहुँचायी। किसी विपत्ति में वे फँस तो नहीं गये ? इतने में नकुल, सहदेव के साथ धर्मराज पहुँचे। इसके थोड़ी ही देर बाद भीमार्जुन द्रौपदी के साथ आये। आते ही बाहर ही से उन्होंने कुन्ती से कहा "माते, हम भिक्षा ले आये हैं।" "सब समान रूप से बाँट लो।" कहती हुई कुन्ती घर के बाहर आयी। अद्वितीय सौंदर्य-राशि द्रौपदी को देखते ही स्तंभित रह गयी।

कुन्ती ने चिंतित होते हुए धर्मराज से कहा "पुत्र, मुझसे बड़ी तृटि हो गयी। भीमार्जुन ने जब मुझसे कहा कि हम भिक्षा ले आये हैं तब मेरे मुँह से अनायास निकल पडा कि समान रूप से बाँट लो। तुम तो जानते ही हो कि मैं कभी

असत्य नहीं बोलती। इस कन्या को तुम सब स्वीकार करोगे तो वह अधर्म होगा। स्वीकार नहीं किया तो मेरी बात असत्य सिद्ध होगी। अतः तुम्हीं निर्णय पर आओ कि धर्म का मार्ग क्या है ?''

धर्मराज थोड़ी देर तक सोच में पड़ गया। फिर उसने कुन्ती को सांत्वना दी और अर्जुन से कहा ''अर्जुन, अग्नि को साक्षी बनाकर इस कन्या से तुम विवाह करना।''

इसपर अर्जुन ने कहा ''यह कैसे संभव होगा ? आप और भीम मुझसे बड़े हैं। आप अविवाहित रहें और मैं विवाह कर लूँ ? यह तो अनाचार है।'' धर्म-शास्त्र कहता है कि अग्रज के उपरांत ही अनुज का विवाह होना चाहिये। मैं धर्म के विरुद्ध जाकर अधर्म नहीं करूँगा।''

माता कुन्ती और भाई अर्जुन की बातों पर धर्मराज ने ध्यान देकर खूब सोचा - विचारा और अंत में अपना निर्णय सुनाया ''हम सब इस कन्या से विवाह करेंगे। यह हम सबकी पत्नी है।'' इतने में कृष्ण पाँडवों को ढूँढ़ते हुए बलराम के साथ वहाँ आया। दोनों ने परस्पर एक-दूसरे को प्रणाम किया।

धर्मराज ने कृष्ण से पूछा ''कृष्ण, ब्राह्मण का वेष धारण करके हम अज्ञात जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें कैसे पहचान पाये। वहाँ क्यों आये ?''

कृष्ण ने हँसते हुए कहा ''राजन्, अग्नि क्या कहीं छिपायी जा सकती है ? आज स्वयंवर में जो बल-प्रदर्शन हुआ, वह क्या पाँडवों के अलावा किसी से संभव है ? अच्छा हुआ, कुटिल दुर्योधन की चाल सफल नहीं हो पायी। अच्छा इसीमें है कि आपकी असलियत के बारे में किसी को ज्ञात ना हो।'' पाँडवों से उसने बिदा ली और बलराम के साथ चला गया।

राजा द्रुपद को विश्वास नहीं हो जा रहा था कि एक ब्राह्मण ने यह अद्भुत कर दिखाया। मन ही मन उसे शंका होने लगी। किन्तु वह कैसे जाने कि आख़िर यह है कौन ?

इस बीच धृष्टद्युम्न ने एक काम किया। अब तक किसी को मालूम नहीं हो पाया कि द्रौपदी को पानेवाला वह ब्राह्मण कौन है, यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ रहता है। यह भी नहीं जानते द्रौपदी को वह कहाँ ले जायेगा। इसलिए वह भी

ब्राह्मणों के साथ चुपचाप गया। अर्जुन के साथ-साथ छिपे-छिपे कुम्हार के घर के पास आया और एक कोने में छिपकर सब कुछ सुनता और देखता रहा।

कृष्ण और बलराम के चले जाने के बाद भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव भिक्षा माँगकर ले आये। कुन्ती ने उसमें में से थोड़ा अतिथियों के लिए बचाया और शेष भिक्षा के दो भाग किये। एक भाग भीम को देकर बाक़ी एक भाग चारों को परोसने के लिए उसने द्रौपदी से कहा। द्रौपदी ने वैसा ही किया।

भोजन समाप्त होने के बाद सहदेव ने हिरण के चर्मों को बिछाया, जिनपर वे लेट गये। पाँडवों के पाँवों के पास द्रौपदी सो गयी।

द्रौपदी को इस बात पर चिंता नहीं हुई कि उसका विवाह एक ब्राह्मण से हुआ। ब्राह्मण होते हुए भी उसके मुख पर क्षत्रिय का तेजस्व छाया हुआ था। वह देखने में अति मनोहर लग रहा था। इसलिए सहर्ष उसने उसे जयमाला पहनायी। जब कुम्हार के घर आयी तो पाँचों भाइयों ने उसे अपनी पत्नी बना लिया। अपनी माता की बात रख ली। उनकी पारिवारिक एकता, माता के प्रति उनका आदर-भाव, भाई-भाई का पारस्परिक स्नेह तथा धर्म-पथ पर चलने की उनकी निष्ठा से वह बहुत ही प्रभावित हुई। मन ही मन अपने अहोभाग्य पर आनंद-सागर में डूब गयी।

तदनंतर पाँडवों ने युद्ध-व्यूह रचना के बारे में बातें कीं। विविध अस्त्रों के प्रयोग के बारे में चर्चाएँ कीं। धृष्टद्युम्न छिपकर उनकी सारी बातें सुनता रहा। उसने अपने पिता के पास आकर कहा कि वे ब्राह्मण नहीं हैं, क्षत्रिय ही हैं। अपने इस अभिप्राय के आधार भी बताये। उसने और विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा "हमारी कृष्णा को दो ही ले गये थे, किन्तु वहाँ तीन और हैं। उनकी माता भी वहीं है। निस्संदेह ही वे उत्तम क्षत्रिय लगते हैं। मेरा अनुमान है कि वे पाँडव ही होंगे। पाँडव भी तो पाँच हैं।"

इन बातों को सुनकर द्रुपद को अपार आनंद हुआ। उसे लगा कि उसकी इच्छा की पूर्ति हुई है। और विवरण प्राप्त करने के लिए उसने अपने पुरोहित को कुम्हार के घर भेजा। **- सशेष**

कंजूस का तर्क

राजपुर में कनक नामक एक व्यापारी था। सूद पर सूद लेकर उसने बहुत-सा धन कमाया। गाँव के लोग उसे महाकंजूस कहा करते थे। किन्तु कनक उनकी टीका-टिप्पणियों की परवाह नहीं करता था। नाराज़ भी नहीं होता था। वह कहता था "जिसके पास कुछ है नहीं, उसके कंजूस होने का सवाल ही नहीं उठता। जो धनी है, अगर थोड़ा-बहुत कंजूस हुआ, तो क्या हुआ? वह बुराई कही नहीं जा सकती। एक तरह से कंजूसी का होना आवश्यक भी हैं। पैसों की जिनको ज़रूरत पड़ती है, सूद पर देकर वह उनकी सहायता करता है। उनकी ज़रूरतों को पूरी करता हैं।"

एकबार कनक खेत से लौटते हुए चप्पल सीनेवाले चमार के पास गया। चमार नारायण ने चप्पलों की एक जोड़ी उसे दिखाते हुए कहा "साहब, बहुत ही अच्छे चमड़े से बने चप्पल हैं ये, शहर में बीस रुपयों से कम दाम में ये नहीं मिलेंगे। मैं दस रुपयों में ही आपको दूँगा। लीजिये।"

कनक ने चिढ़ते हुए चप्पलों की तरफ़ देखते हुए कहा "ना घिस जानेवाले इन पाँवों में घिस जानेवाले चप्पलों की क्या ज़रूरत? मैं यहाँ चप्पलों के लिए नहीं आया हूँ। रास्ते में मेरे एक दोस्त ने चुरुट दिया है। उसके पास खाली दियासलाई थी। मैंने देखा कि तुम चुरुट पी रहे हो। तुम ज़रा दियासलाई देना।"

- नवनीत

जारुल

गीली मिट्टी पर, नदियों के तटों पर झुरमुटों के बीच में दिखायी देनेवाले जारुल पेड़ों में बहुत ही सुंदर ढंग से फूल विकसित होते हैं। उस फूल को 'रानी पुष्प' कहते हैं। स्वीडन के वृक्ष-शास्त्रज्ञ मागनस वी. लाज़र स्ट्राम ने इसे प्लास रेजीनी (रानी पुष्प) कहा है। उन्ही के नाम पर वृक्ष-शास्त्र में इसका नाम पड़ा - लाजर फ्रोमिया प्लास रेजीनी। ये फूल बहुत ही आकर्षणीय होते हैं। जब ये फूलते हैं तब इनका रंग होता है कोमल गुलाबी रंग। जब ये झड़ जाते हैं तब इनका रंग सफ़ेद होता है। ये फूल बड़े-बड़े गुच्छों में होते हैं। फूल की पंखुडियाँ मुडी हुई होती हैं। साल में दो ही बार अप्रैल-मई, और जुलाई-अगस्त में ये फूल विकसित होते हैं। इन पेड़ों के पत्तों का ऊपरी भाग पक्के हरे रंग का होता है। निचला भाग कोमल रंग का होता है। पत्तों के नीचे के रंग-रेशे घने होते हैं। अप्रैल-मई में पल्लवित होते हैं। फल हरे और पकने के बाद काले होते हैं। ये फल जल्दी झड़ नहीं जाते। पेड़ से ही जुड़े होते हैं।

कहा जाता है कि सागवान के बाद जारुल की लकड़ी ही मज़बूत होती है। इनका उपयोग जहाज़ों और गाड़ियों के निर्माण में होता है। चूँकि इनमें पानी को सहने की अधिकाधिक शक्ति है, और दीर्घ काल तक टिक सकते हैं, इसलिए बंदरगाहों के खंभों के लिए इनका अधिक उपयोग होता है। देश-विदेशों में इनकी लकड़ी का अधिक उपयोग होता है। हमारे देश में ये अधिक मात्रा में प्राप्त हैं।

इस पेड़ को हिन्दी में 'जारुल', बंगाली में 'अजार' मराठी में 'टामान' ओरिया में 'पटोली', तमिल में 'कडलि' मलयालम में 'आरंपू' कन्नड में 'चल्ला' और तेलुगू में 'वरगोगु' कहते हैं।

हमारे देश के ऋषि : ९

मार्कंडेय

मुनि मृकंड हिमालय प्रदेशों में रहते थे। बहुत काल तक उनकी कोई संतान नहीं हुई। उन्होंने पुत्र की प्राप्ति के लिए शिव की पूजा की। जब वे ध्यान-मग्न थे तब शिव प्रत्यक्ष हुए और पूछा "सोलह वर्षों तक ही जीवित रहनेवाले विवेकी पुत्र चाहते हो अथवा चिरंजीवी अविविकी पुत्र?"

विद्या-विवेक के प्रति अति गौरव था मृकंड को। अत: उन्होंने चाहा कि विवेकी पुत्र ही हो।

उनकी इच्छा के अनुसार पुत्र उत्पन्न हुआ। उनका नाम रखा गया मार्कंडेय। जब वे दस वर्ष के थे, तभी दूर-दूर से पंडित, जिज्ञासु अपने संदेहों को दूर करने के लिए उनके पास आया करते थे। बारहवीं साल की उम्र में ही वे सद्‌गुरु तथा निष्ठावान माने गये।

किन्तु जैसे-जैसे वे बड़े होते गये, वैसे-वैसे उनके माता-पिता चिन्ता-ग्रस्त होते गये। परंतु उन्होंने अपनी चिन्ता अपने पुत्र से व्यक्त नहीं की। जब मार्कंडेय ने सोलहवें वर्ष में पदार्पण किया, तब वे अपने आँसुओं को रोक नहीं पाये। उनकी स्थिति पर मार्कंडेय को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने इस स्थिति का कारण पूछा। तब उन्हें अपने पुत्र को बताना ही पड़ा कि उसकी मृत्यु समीप आ गयी है। किन्तु हाँ, अगर मार्कंडेय के माता-पिता अपने शेष जीवन का त्याग करने सन्नद्ध हों तो वे चिरंजीवी बने रह सकते हैं। मार्कंडेय ने अपनी शीतलवाणी से संतप्त माता-पिता को साहस बंधाया। फिर वे निर्जन प्रदेश में चले गये और शिव के ध्यान में मग्न हो गये। उनकी आयु की समाप्ति का समय जब आसन्न हुआ, तब यमदूत उन्हें ले जाने आये। परंतु उनके

चारों ओर व्याप्त प्रकाशमान ज्योति को देखकर वे उनके निकट नहीं आ पाये। तब यमधर्मराज स्वयं आये और मार्कंडेय पर अपना पाश फेंका। यमपाश उस शिवलिंग में जाकर अटक गया, जिस शिवलिंग से मार्कंडेय चिपटे हुए थे। उसी क्षण क्रोधित शिव प्रत्यक्ष हुए। यमराज मर गये। इसी कारण शिव का नाम पड़ा मृत्युंजय।

जब शिव शांत हुए, तब यम को पुनर्जीवित किया। उस अवधि में मार्कंडेय की मृत्यु की घड़ियाँ बीत गयीं। शिव ने वर दिया कि मार्कंडेय सदा सोलह वर्ष की उम्र के ही रहेंगे। युग बीत गये, किन्तु मार्कंडेय चिरंजीवी ही रहे।

इस पुराण-गाथा में कुछ अंतरार्थ भी हैं। मार्कंडेय ने अपनी प्रत्येकता तथा व्यक्तित्व को त्यज दिया और उस भगवान में लीन हो गये, जो शाश्वत तथा अमर है। इसीलिए काल के आसन्न होने पर भी वे सजीव ही रहे। वे सदा सोलह वर्ष के ही रहे। उनके लिए ना कोई भूत है, ना भविष्य अथवा ना ही वर्तमान। उनके पास जो है, वह है केवल अनंतकाल। यह एक प्रकार से अद्‌भुत आध्यात्मिक अनुभूति है।

क्या तुम जानते हो?

१. बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार कहाँ से शुरू किया ?
२. १९३८ में हिटलर ने एक देश को अपने देश में मिला लिया और १९४५ में उस देश को छोड़ दिया। उस देश का क्या नाम है ?
३. भूमि पर रेंगनेवाले जंतुओं में से सबसे बड़ा जंतु कौन-सा है ?
४. 'अर्जुन अवार्ड' को पानेगला प्रथम भारतीय क्रिकेट-खिलाडी कौन है ?
५. 'घाना' का पुराना नाम क्या है ?
६. कलकत्ते की स्थापना किसने की ?
७. साधारणतया हाथी का जीवन-काल कितना है ?
८. ईजप्ट में अधिक संख्यक किस भाषा में बोलते हैं ?
९. अबिसीनिया का वर्तमान नाम क्या है ?
१०. 'कवियों का कवि' के नाम से सुप्रसिद्ध अंग्रज़ी के कवि कौन हैं ?
११. इटली में उपयोग में लायी जानेवाली 'करेन्सी' का क्या नाम है ?
१२. हमारे पुराणों में लिखित 'ऐरावत' हाथी किसकी सवारी थी ?
१३. अंतरिक्ष में पहले-पहले चलनेवाले का क्या नाम है ?
१४. भूमि पर पाया जानेवाला सबसे ऊँचा जंतु कौन-सा है ?
१५. पारसियों के पवित्र ग्रंथ का क्या नाम है ?
१६. 'एंजल फाल्स' जलप्रपात किस देश में है ?
१७. 'वाटरलू' में नेपोलियन को किसने हराया?
१८. पाकिस्तान के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?
१९. केनेडा की सबसे लंबी नदी का नाम क्या है ?

उत्तर

१. वारणासी के समीप के सारनाथ में
२. आस्ट्रिया
३. मगर
४. सलीम दुर्रानी (१९६१)
५. गोल्ड कोस्ट
६. जाट चार्नाक
७. ७०-८० साल
८. अरबी
९. एथियोपिया
१०. एडमंड स्पेन्सर्स (१५५२-१५९९)
११. लीरा
१२. इंद्र
१३. अलेक्सी लियोनाव (१९६५)
१४. जिराफी
१५. जेंद अवस्ता
१६. वेनीजुला
१७. आर्थर वेल्लेस्ली
१८. महम्मद अली जिन्ना
१९. मेकेनजी

पीठ पीछे

सीताराम की इकलौती बेटी थी अरुणा। बड़ी ही नेक और सुँदर थी। पास ही के गाँव के वीरदास ने खबर भेजी थी कि अपने बेटे जयंत के साथ अरुणा का विवाह कराना चाहता हूँ। सीताराम जानना चाहता था कि वह आदमी कैसा है और उसके क्या हालात हैं? इसलिए वह उसके गाँव गया।

वीरदास संपन्न है और पढ़ा-लिखा। गाँव में उसकी अच्छी इज़्ज़त थी है। उसने सीताराम की आव-भगत की और कहा "आपकी बेटी अरुणा के बारे में बहुत-से मेरे जाने-पहचाने लोगों ने बहुत ही अच्छी बातें कही हैं। मेरी तो इच्छा है कि ऐसी ही लड़की मेरी बहू बने। मुझे दहेज नहीं चाहिये। यह कोई ज़रूरी भी नहीं कि शादी धूमधाम से हो। शास्त्रोक्त विवाह कराइये और बहू को मेरे घर भेजिये।"

जयंत भी देखने में सुँदर लग रहा था। विनय से व्यवहार करता था। सीताराम को लगा कि यह रिश्ता बहुत ही अच्छा है। वह गाँव लौटा और उसने ये सारी बातें अपनेलोगों को सुनायीं। घर में भी सबको यह रिश्ता पसंद आया।

ऐसे समय पर शांताराम नामक एक व्यक्ति एक बड़ी बुरी ख़बर लेकर आया। उसने सीताराम से कहा "वीरदास किसी से बात करते हुए कह रहा था कि सीताराम का परिवार दरिद्र परिवार है। अरुणा ग़लती से उस घर में पैदा हुई। मैं उस लड़की को उबारना चाहता हूँ, इसलिए बिना दहेज लिये उसे अपनी बहू बनाने के लिए तैयार हो गया। क्या कोई भिखारी से धन लेगा? वे दहेज देना तो चाहते थे, लेकिन मैंने साफ-साफ इनकार कर दिया।"

शांताराम की बातों से सीताराम बहुत ही नाराज़ हो गया। उसने रिश्ता तोड़ने का निश्चय किया। तब सीताराम के पिता रघुराम ने दख़ल देते हुए कहा "वीरदास ने तुम्हारे साथ बहुत ही अच्छा बरताव किया था। उसीने स्वयं

शशिधर
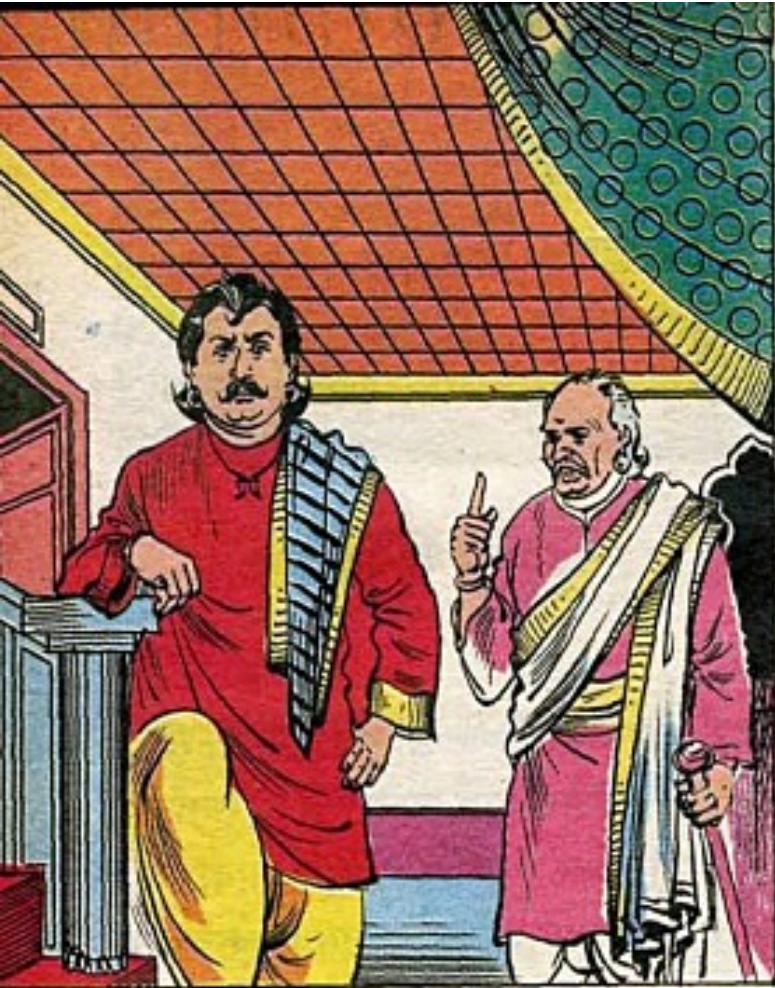
क्योंकि वह किसान ग़रीब है और मैं उसका खेत खरीदने के बहाने धन दान में दे रहा हूँ। इसी के बारे में वीरदास से बात करने वह किसान भी उसी के पास जा रहा था।

सीताराम ने किसान से कहा "इसी तरह के काम पर मैं भी उसीसे मिलने जा रहा हूँ। अच्छा हुआ, हम दोनों साथ-साथ जा रहे हैं।"

वे दोनों थोड़ी देर तक गये कि नहीं, उन्होंने देखा कि एक व्यापारी अपनी घोड़े-गाड़ी की मरम्मत करवा रहा था। एक बार जब उसकी बड़ी बुरी हालत थी, तब वीरदास ने उसे एक हज़ार अशर्फ़ियाँ कर्ज में दीं थीं। उस धन से व्यापारी ने शहर में व्यापार किया और बहुत-सा धन कमाया। उसने वीरदास को धन वापस दे दिया और हर साल क़ीमती भेंटें उसे भेजता रहा। एक बार जब वीरदास शहर आया, तब उसने उसका बहुत ही अच्छा सत्कार भी किया। लेकिन सुनने में आया कि वीरदास उसे कृतघ्न कह रहा है और उसपर निंदा ड़ाल रहा है कि उससे मिलने वह नहीं आया। इसी के बारे में पूछताछ करने वह भी वीरदास के गाँव जा रहा है।

जब व्यापारी को मालूम हुआ कि सीताराम और किसान भी उससे पूछताछ करने ही निकले हैं तो उसने उनसे कहा "मेरी गाड़ी की मरम्मत अभी हो जायेगी। हम तीनों गाड़ी में जाएँगे।"

थोड़ी ही देर में गाड़ी की मरम्मत हो गयी।

विवाह का प्रस्ताव रखा था। ऐसा आदमी अगर यों बोले तो अवश्य ही कोई सबल कारण होगा। ऐरे-ग़ैरे लोगों की बातों पर विश्वास करने से बेहतर यही होगा कि तुम खुद जाओ।"

सीताराम को पहले पिता की सलाह ठीक नहीं लगी। किन्तु थोड़ी देर सोच-विचारने के बाद लगा कि सलाह सही है। उसने जो सुना, वह सच हो तो निर्णय किया कि वहीं रिश्ता तोड़ूँगा, उसे जी भर के गालियाँ देकर लौटूँगा।

रास्ते में उसकी मुलाक़ात एक किसान से हुई। उस किसान ने अपने खेत का एक हिस्सा वीरदास को सस्ते में बेचा था। उससे किसी ने बताया था कि वीरदास कह रहा है कि खेत का वह हिस्सा बंजर है, फिर भी मैंने खरीद लिया।

तीनों जब थोड़ी दूर गये तब रास्ते में वे एक कवि से मिले। उसने कहा "वीरदास ने मेरा परिचय एक ज़मींदार से कराया। मैंने इससे धन भी कमाया और नाम भी। किन्तु मैंने सुना है कि वीरदास मुझपर नाराज़ है, क्योंकि मैंने उसकी प्रशंसा में कोई काव्य नहीं लिखा।"

कवि ने उन तीनों को यह बात बतायी और कहा "प्रारंभ में मैंने उनके बारे में एक कविता लिखी थी। उन्होने वह कविता सुनी और मुझसे कहा "मैं तो साधारण व्यक्ति हूँ। मैं इस कविता के योग्य नहीं हूँ।" उन्होंने उस कविता पर आपत्ति भी उठायी। परंतु आज वे मेरी निंदा कर रहे हैं। मैं उन आदमियों में से हूँ, जो साफ़-साफ़ बोल देते हैं। छिपाकर बात करने का मेरा स्वभाव नहीं है। अगर वे चाहते तो मुझसे कह सकते थे। मैं उनपर काव्य लिख देता। उनकी ये दोहरे ज़बानोंवाली बात मुझे खटकी। इसी के बारे में पूछताछ करने उन्हीं के पास निकला हूँ।"

वह भी गाड़ी में उन तीनों के साथ बैठ गया। वीरदास के घर पहुँचते-पहुँचते शाम हो गयी। उस समय वीरदास चबूतरे पर बैठकर किसी से बातें करने में मशग़ूल था। गाड़ी से उतरे चारों आदमियों को देखकर बड़े प्यार से उसने कहा कि इस प्रकार एक साथ चारों आत्मीयों को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह उन्हें अंदर ले गया। नौकरों को आज्ञा दी कि अतिथियों का अच्छा स्वागत-सत्कार हो, उनकी देखभाल में कोई त्रुटि ना हो। उसके चेहरे पर जो पवित्रता बिखरी हुई थी, उसे देखकर चारों चुप रह गये। उनके मुँह से एक भी

लिए जब आतुर थे कि असल में बात क्या है, तो उस आदमी ने आप बीती यों बितायी।

उस गाँव में वीरदास का एक और घर है। पहले वह उसी घर में रहता था। धन कमाने के बाद अब इस बड़े घर में रहने लगा है। बहुत समय तक शुभ कार्यों पर घर आये रिश्तेदारों को वह वहीं ठहराता था। अब उसका उपयोग कम हो रहा है और इस कारण धीरे-धीरे वह उजड़ रहा है। सूरज नामक एक किसान ने चाहा कि वह घर खरीद लूँ। वीरदास ने भी मान लिया कि उसे उस घर को सस्ते दामों में बेच दूँगा। सूरज धन जुटाते के काम में लगा है।

उसी गाँव के गणनाथ ने सूरज के भाग्य को सराहा और साथ ही वीरदास के उदार गुणों की भी भरपूर प्रशंसा की। तब सूरज ने तिरस्कार-भरे स्वर में कहा "वह घर तो भूत-प्रेतों का बसेरा है। मुफ़्त में लेने भी कोई तैयार नहीं होगा। मैं तो धन देकर खरीद रहा हूँ। इसमें उसकी क्या अच्छाई है? ना ही इसमें मेरा भाग्य है, ना ही उसका। ज़रूरत मेरी है, मैंने ले लिया। बस, बात ख़तम।"

अब गणनाथ कह रहा है कि ऐसे एहसान फरामोश को वह घर क्यों सस्ते में दे। वह कहता है कि अगर वह घर उसे दिया जाए तो जन्म-भर उसका कृतज्ञ व ऋणी रहेगा। उसकी पूजा करता रहेगा। पर वीरदास अपने निर्णय पर अटल है। वह किसी भी हालत में अपने वचन से मुकरना नहीं चाहता।

शब्द नहीं निकला। किन्तु उनके मनों में अब भी वीरदास के प्रति शत्रु-भावना बनी हुई थी, इसलिए वे अंदर आने से झिझक रहे थे।

इतने में चबूतरे पर बैठे दूसरे आदमी ने वीरदास से कहा "महाशय, आपने मेरी बात पर अपना निर्णय नहीं सुनाया।"

"इसपर अपना निर्णय-सुनाने की क्या जरूरत है? मैंने जो वचन दिया, दिया। किसी भी हालत में मैं उसे निभाऊँगा। यह तो मेरा सिद्धांत है" वीरदास ने उस आदमी से कहा।

तब वह आदमी चबूतरे से उतरा और उन चारों के पास आकर कहा "महाशय, आप सब अगर इनके अपने ही हों तो उन्हें समझाइये और मेरा उपकार कीजियेगा।" चारों यह जानने के

सीताराम और बाक़ी तीनों कुछ कहें, इसके पहले ही वीरदास ने कहा "जब आदमी सामने नहीं होता, तो अपना उल्लू सीधा करने के लिए दूसरों के बारे में अनेकों शिकायतें की जाती हैं। तरह-तरह की बेबुनियाद कहानियाँ गढ़ी जाती हैं और ग़ैर हाज़िर आदमी को बुरा साबित करने की व्यर्थ कोशिशें की जाती हैं। मैं ऐसी बातों और ख़बरों पर ध्यान नहीं देता। मेरी दृष्टि में पीठ पीछे कही जानेवाली बातों का कोई मूल्य नहीं है। सामने जो होता है, वही मेरे लिए मुख्य व प्रधान है। हाँ, हो सकता है, यह कभी सच भी हो, पर ऐसी बातों पर ध्यान देना और उनका विश्वास कर बैठना मेरी पद्धति नहीं है। मेरे ये अपने मेरी इस पद्धति का ही समर्थन करेंगे। वे कदापि तुम्हारे अनुकूल अपना फैसला नहीं सुनायेंगे। अब तुम जा सकते हो।"

इन बातों को सुनकर चारों के चेहरों का रंग उड़ गया। उन्होंने अब तक वीरदास के ही बारे में सोचा, सोचते रहे, लेकिन अपने बारे में नहीं सोचा। उन्होंने जान लिया कि वीरदास व्यक्ति की अनुपस्थिति में उस व्यक्ति के बारे में दूसरों की कही बातों का विश्वास नहीं करता। वे अब सोचने लगे कि हम भी क्यों दूसरों की बातों पर विश्वास करके वीरदास को झूठा आदमी मान बैठें।

सीताराम और बाक़ी तीनों यह कहकर वहाँ से तुरंत निकल गये कि कोई ज़रूरी काम है। वीरदास की समझ में नहीं आया कि ये क्यों और कैसे चारों मिलकर आये और क्यों तुरंत वापस जा रहे हैं। जब इतना ज़रूरी काम था, तो आने की ज़रूरत क्या थी। उसे बहुत ही आश्चर्य भी हुआ।

सीताराम और बाक़ी तीनों वीरदास से पूछताछ करने आये, अपने संदेहों को दूर करने आये। किन्तु अब उनके संदेह आप ही आप दूर हो गये। उनको अब इस बात पर गर्व होने लगा कि हम वीरदास जैसे सच्चे, ईमानदार तथा आदर्श व्यक्ति के अपने आदमी हैं, बंधु हैं। उसके स्वभाव ने उनपर अमिट असर ड़ाला। वे जान गये कि पीठ पीछे कही जानेवाली बातों का विश्वास करना मूर्खता व घातक हैं।

जल्दी-जल्दी में

सोमशास्त्री पुरोहित है। छोटी-सी बात पर भी वह घबड़ाता है। जल्दी-जल्दी में सब कुछ करने की उसकी आदत है।

पड़ोस के गाँव में विवाह संपन्न होनेवाला है। सोमशास्त्री को पौरोहित्य के लिए बुलाया गया। उसे बहुत आनंद हुआ। घबड़ाता वह बहुत है, इसलिए मुर्गी की बांग के पहले ही निकलते-निकलते उसने अपनी पत्नी से कहा "मैं निकल रहा हूँ। दरवाज़ा बंद कर लो। चोर घुस सकते है, सावधान रहना।"

सोमशास्त्री की पत्नी नींद से जगी और दरवाज़ा बंद करके फिर से सो गयी।

इसी मौक़े की ताक में बैठे चोरों ने यह सब देखा। रात भर वे कहीं चोरी नहीं कर पाये। सोमशास्त्री चला गया, घर में अब केवल उसकी पत्नी है। सबेरा होने में एक पहर और बाक़ी है। उन्होंने सोया कि सोमशास्त्री के घर में चोरी करेंगे तो शायद कुछ ना मिले, पर चावल अवश्य मिलेगा।

चोर सोमशास्त्री के घर में घुसे। अंदर बत्ती भी नहीं जल रही थी। अंधेरा ही अंधेरा था। चोरों ने इसे अपना भाग्य माना और काम में जुट गये। सोमशास्त्री की पत्नी इस अंधेरे में उन्हें देख नहीं पायेगी।

इतने में सोमशास्त्री जल्दी-जल्दी में वापस आया और दरवाज़ा खटखटाते हुए अपनी पत्नी को पुकारने लगा। उसकी पत्नी ने दरवाज़ा खोला।

"शाल भूल गया" कहते हुए उसने शाल अपने कंधे पर ड़ाल ली और जल्दी-जल्दी में लौट गया।

सोमशास्त्री की पत्नी ने दरवाज़ा बंद किया और अंदर आकर सो गयी। चोरों ने उसे सोने दिया और जब उन्हें विश्वास हुआ कि वह घोड़े बेचकर सो रही है, तब वे ढूँढ़ने लगे कि चावल का बरतन कहाँ है। जब उन्हें बरतन दिखायी

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

पड़ा तो उन्होंने उसके बगल में चादर बिछाया। वे चाहते थे कि चावल उस चादर में ड़ाल लें और ले जाएँ।

इतने में सोमशास्त्री फिर से जल्दी-जल्दी में वापस आया। दरवाज़ा खटखटाया और पत्नी को बुलाया।

पत्नी ने दरवाज़ा खोलकर कहा "इस बार क्या भूल गये ?" "थैली, थैली भूल गया। थोड़ा ले आना" शास्त्री ने कहा। शास्त्री की पत्नी थैली ले आयी, जो चावल के बरतन के बग़ल में ही खूँटी में लटक रही थी।

जब वह थैली के लिए गयी, तब चोरों को थोड़ा-सा हटना पड़ा और छिपना पड़ा। अगर वे वहाँ से नहीं हटते तो अवश्य ही उसके पैर उन्हें लग जाते और रहस्य खुल जाता। वे पकड़े जाते। जाते-जाते बिछी चादर उसके पैर को लगी तो झुककर उसे उसने उठाया और ले जाकर ढ़ककर लेट गयी। यह चोरों को दिखायी नहीं पड़ा।

उसे सोती हुई देखकर चोरों ने बरतन से चावल निकाला, और ज़मीन पर ड़ालते जाने लगे। वे समझ रहे थे कि हम चादर पर चावल ड़ाल रहे हैं। बरतन क़रीबन खाली हो गया। चावल से लदे चादर को बाँधने के लिए उसके कोनों को पकड़ने की वे कोशिश में लग गये। पर कोई भी कोना हाथ में ही नहीं आ रहा था। अब उन्हें मालूम हो गया कि चावल चादर पर नहीं, बल्कि ज़मीन पर है।

वे सोच में पड़ गये कि अब करें क्या कि इतने में तीसरी बार शास्त्री ने दरवाज़ा खटखटाया।

पत्नी ने दरवाजा खोला और कहा "सबेरा हो गया है। अब मैं अपने कामों में लग जाऊँगी।"

यह सुनकर चोर घबड़ा गये और चुपके से सेंध में से भाग गये। उस जल्दी में उनके पास पैसों की जो थैली थी, छोड़कर चले गये।

इस बार सोमशास्त्री ने कोई भी वस्तु नहीं भुलायी। आवश्यक वस्तुओं को लेकर सही समय पर वह विवाह-स्थल पर पहुँच गया। उसकी ज़ल्दबाजी व घबराहट ने उसकी जानकारी के बिना ही उसे लाभ पहुँचाया।
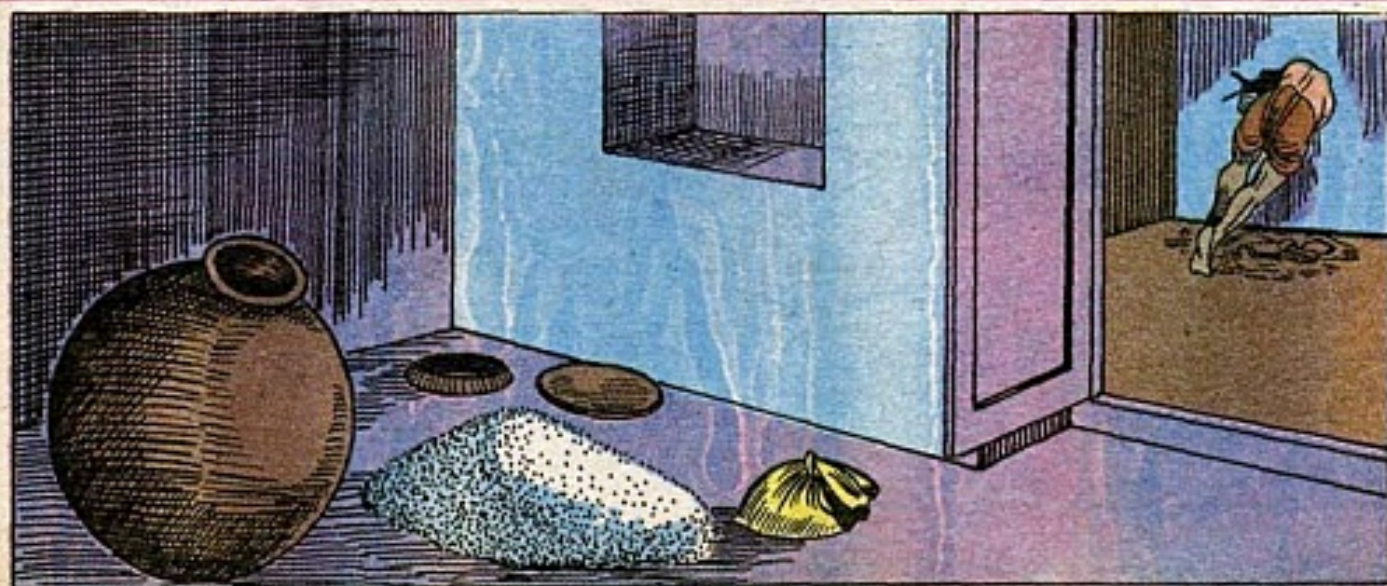
Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text books. Time for games. Time to meet old friends. And make new ones. Time to start studying again. Because there's so much to learn about the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a great year in school. And remember to tell us what you've learnt everyday, when you come home from school !
THE
CHANDAMAMA
COLLECTION
ARTIG1246

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, अक्तूबर, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

A. Seethadevi

A. Seethadevi

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अगस्त, '९५ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

जून, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **जल ही जीवन का आधार**

दूसरा फोटो : **तन को शीतल करती धार**

प्रेषक : **कुमारी सुषमा जोशी,**

B-९२, शिवम कांप्लेक्स, लंका, वाराणसी (उ.प्र.) पि.२२१ ००५.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

वाह उस्ताद वाह !
खुश कर दित्ता !
बोले मेरे लिप्स,
आई लव अंकल चिप्स।

मेरा नाम ______________________

मेरा जन्मदिन ______________________

मेरा पता ______________________

इस पते पर भेजें : अमृत ऐग्रो इन्डस्ट्रीज़ लि.,
सी/34, नोएडा-II, पिन : 201 305

CMH

Uncle Chipps

CHANDAMAMA (Hindi) August 1995 Regd. No. M. 5452